यूको अनुगूँज

यूको बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका

वर्ष: 15 अंक: 1 अप्रैल - जून-2024

सूचना सुरक्षा विशेषांक

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours your Trust

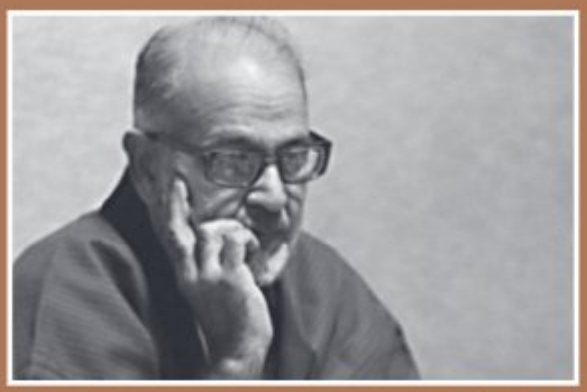

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

परिचय

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के कसया (आधुनिक कुशीनगर) में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। वहाँ उन्होंने संस्कृत, फ़ारसी, अँग्रेज़ी और बांग्ला भाषा और साहित्य की शिक्षा प्राप्त की। हिंदी साहित्य में उनकी प्रतिष्ठा एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न कवि, संपादक, ललित-निबंधकार और उपन्यासकार के रूप में है। इसके साथ ही उन्होंने अपने यात्रा वृतांत, अनुवाद, आलोचना, संस्मरण, डायरी, विचार-गद्य एवं नाटक से भी हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।

अज्ञेय हिन्दी कविता के आधुनिक युग के प्रवर्तक है। हिन्दी उपन्यास विधा में अभिनव प्रयोग करने तथा साहित्य की लगभग समस्त विधाओं में सार्थक हस्तक्षेप के लिए उन्हें स्मरण किया जाता है। एक विप्लवी, एक सैनिक तथा एक भावुक प्रेमी के रूप में उन्होंने परवर्ती पीढ़ी पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। बोला कैसे जाता है तथा चुप कैसे रहा जाता है, यह अज्ञेय से सीखा जा सकता है। जयशंकर प्रसाद के बाद हिन्दी भाषा को ऐसा वांग्मय पुरुष नहीं मिला। उन्होंने समाज की नब्ज देखी तथा समय को संबोधित करने लायक भाषा गढ़ी। प्रतीकों की पुनरावृत्ति से निष्प्राण होती जा रही भाषिक पहचान उन्होंने बदल दी। उन्होंने अपने लिए बेंचमार्क तय किया, उसको उपलब्ध किया तथा हमें दिखा दिया कि जिया कैसे जाता है, कहा कैसे जाता है तथा रहा कैसे जाता है।

अज्ञेय ने कविताओं में ही नहीं आयोजनों में भी प्रयोग को बढ़ावा दिया । उनकी साहित्यिक यात्राएं यथा जय जानकी जीवन यात्रा, भागवत भूमि यात्रा तथा भारतीय साहित्य और संस्कृति को समझने की एक चेष्टा थी जिसमे उनके अनेक समकालीन तथा नई पीढ़ी के रचनाकार सहयात्री बने।

अज्ञेय को भारत - भारती पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय 'गोल्डन रीथ' पुरस्कार आदि के अतिरिक्त साहित्य अकादमी पुरस्कार (1964) ज्ञानपीठ पुरस्कार (1978) से सम्मानित किया गया।

निधन : 4 अप्रैल 1987

मैं तुम्हारे ध्यान में हूँ!

प्रिय, मैं तुम्हारे ध्यान में हूँ!
बह गया जग मुग्ध सरि-सा मैं तुम्हारे ध्यान में हूँ!
तुम विमुख हो, किन्तु मैंने कब कहा उन्मुख रहो तुम?
साधना है सहसनयना-बस, कहीं सम्मुख रहो तुम!

विमुख-उन्मुख से परे भी तत्त्व की तल्लीनता है-
लीन हूँ मैं, तत्त्वमय हूँ, अचिर चिर-निर्वाण में हूँ!
मैं तुम्हारे ध्यान में हूँ!

क्यों डरूँ मैं मृत्यु से या क्षुद्रता के शाप से भी?
क्यों डरूँ मैं क्षीण-पुण्या अवनि के सन्ताप से भी?
व्यर्थ जिस को मापने में है विधाता की भुजाएँ-
वह पुरुष मैं, मर्त्य हूँ पर अमरता के मान में हूँ!
मैं तुम्हारे ध्यान में हूँ!

रात आती है, मुझे क्या? मैं नयन मूँदे हुए हूँ,
आज अपने हृदय में मैं अंशुमाली को लिये हूँ!
दूर के उस शून्य नभ में सजल तारे छलछलाएँ-
वज्र हूँ मैं, ज्वलित हूँ, बेरोक हूँ, प्रस्थान में हूँ!
मैं तुम्हारे ध्यान में हूँ!

एकनिष्ठ उन्मुखता इस कविता का संदेश है। कवि अपनी ओर से निश्चिन्त है। उसे इस बात की चिंता नहीं है कि उसकी साधना को स्वीकृति मिल रही है या नहीं। उसे अपने प्रेम पर अभिमान है और वह किसी प्रतिदान की अपेक्षा नहीं रखता। वह अपने ध्यान में मग्न है।

यूको अनुगूँज

यूको बैंक की तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका

वर्ष-15, अंक -1

अप्रैल-जून 2024

संरक्षक

अश्वनी कुमार

प्रबंध निदेशक एवं

मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रेरणा

राजेन्द्र कुमार साबू

विजयकुमार एन कांवले

कार्यपालक निदेशकगण

दिग्दर्शन

राजेश नागर

महाप्रबंधक

मानव संसाधन, कार्मिक सेवा, प्रशिक्षण एवं राजभाषा

संपादक

अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

प्रवीर कुमार घोष

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

सूरज कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

राम अभिषेक तिवारी

प्रबंधक (राजभाषा)

राजू रंजन

प्रबंधक (राजभाषा)

विनीता कुमारी

राजभाषा अधिकारी

यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय

10 बी टी एम सरणी, कोलकाता – 700001

ई-मेल : horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in

फोन : 033-44557384

आन्तरिक परिचालन के लिए

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ सं
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का सन्देश		2
कार्यपालक निदेशक का सन्देश		3
कार्यपालक निदेशक का सन्देश		4
महाप्रबंधक का सन्देश		5
यूको बैंक के गैर-कार्यपालक अध्यक्ष का स्वागत		6
सम्पादकीय		7
आमुख लेख		
डिजिटल भारत में फिनटेक के प्रसार में भारतीय भाषाओं की भूमिका -	सत्येन्द्र कुमार शर्मा	8
वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) -चुनौतियाँ एवं अवसर	विकास गुप्ता	13
सूचना सुरक्षा	श्रवण कुमार मिश्रा	18
साइबर सुरक्षा	किसलय कुमार	21
यात्रा वृत्तांत		
विश्वभारती: यात्रा वृतांत - राजू रंजन		23
पुस्तक समीक्षा		
शांतिनिकेतन का हिंदी-भवन - राम अभिषेक तिवारी		26
बाल वीथिका		30
बैंकिंग लेख		
एक मुलाकात -	मो० साबिर, उप महाप्रबंधक	32
कविताई		
साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो -	विवेकानंद सिंह	31
उम्मीदों का तारा देखा	- तरुण कुमार सिंह	31
गाँडीव का पछतावा	- संतोष सिंह 'राख'	38
प्रेम	- कमल पन्त	38
डियर जिन्दगी	- सुशांत आचार्य	39
राम भला क्या राजी होंगे	- तरुण श्रोत्रिय	43
छल है जिन्दगी	- ओंकार राम टाक	48
विविध		
प्रशिक्षण एक सुखद संस्मरण	- ऋचा कुमारी	40
बो एक कप कॉफ़ी	- ऋतु प्रकाश	42
चीनी का पराठा	- शिवम मिश्रा	44
भोजनम्		
कुछ प्रसिद्ध व्यंजन		45
गतिविधियाँ		47

पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के हैं, संपादक मंडल अथवा यूको बैंक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,

यूको अनुगूँज के माध्यम से आप सबसे संवाद करते समय मेरे सामने अनेक विषय आ जाते हैं। ये विषय अपने बैंक, यूकोजन की सर्जनशीलता तथा भाषा-संस्कृति के प्रश्नों को लिए हुए होते हैं। जहां तक अपने बैंक की बात है, हम अब एक मजबूत आधार पर खड़े हैं। हाल के महीनों में बैंक ने अनेक टेलरमेड उत्पाद प्रस्तुत किए हैं तथा ग्राहक उन्मुख अनेक अभियान चलाए हैं ताकि तेजी से बदलते आर्थिक परिदृश्य में हम बैंकिंग उद्योग में प्रासंगिक तथा ग्राहकों के बीच सबसे पसंदीदा बैंक बने रहें। हमारे इन सभी प्रयासों के केंद्र में हमारे ग्राहक ही हैं।

जहां तक सर्जनशीलता की बात है, जीवंत तथा वर्धनशील संस्थान सर्जनशीलता (क्रिएटीविटी) से ही अपनी ऊर्जा ग्रहण करते हैं। सर्जनशीलता के लिए साहित्य तथा कला का विशेष महत्व है। तकनीक के इस युग में सभी प्रतिस्पर्धी एक ही प्लेटफ़ार्म पर खड़े हैं। अपनी सर्जनशीलता के बल पर ही कोई आगे चला जाता है तो इसके अभाव में कोई पीछे छूट जाता है। हमारी भाषा हमारी सबसे मुखर पहचान है तथा हमारी संस्कृति हमारा सबसे बड़ा आकर्षण है। बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका *यूको अनुगूँज* यूकोजनों में सर्जनशीलता को प्रोत्साहित करने का एक मंच है। मुझे प्रसन्नता है कि यूकोजनों के विचार तथा सर्जना से इस पत्रिका के विगत अंक समृद्ध हुए हैं।

मुझे विश्वास है कि *यूको अनुगूँज* के माध्यम से यूकोजन की सर्जनशीलता को यथोचित प्रोत्साहन मिलेगा।

आपके और आपके परिवारजनों के लिए शुभकामनाओं के साथ,

(अश्वनी कुमार)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

बैंक की गृह पत्रिका यूको अनुगूँज का यह अंक जब तक आपके हाथों में पहुंचेगा इस वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही समाप्ति के करीब होगी। जैसा कि आप जानते हैं कि बैंक ने पहली तिमाही में बेहतर कार्यनिष्पादन करते हुए सभी महत्वपूर्ण प्राचलों (पैरामीटरों) पर अपने कार्यनिष्पादन में सुधार दर्ज किया है। यह क्रम आगे भी बढ़ना चाहिए। ऐसा हम सबके सम्मिलित प्रयासों से ही संभव है। इन प्रयासों में यदि हम कुछेक बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करें तो अनुकूल परिणामों के अवसर अवश्य हाथ आएंगे। मैं कुछ बिंदुओं की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहूँगा:

1. अपने कार्यक्षेत्र का बेहतर तथा व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने का सतत प्रयास
2. अपनी प्रभाविता (इफ़ेक्टिवनेस) का क्षेत्र बढ़ाना तथा
3. बैंक के ब्रांड एम्बेसेडर की तरह हर क्षेत्र में सक्रिय रहना।

संस्कृत में एक उक्ति है- ज्ञानं भार: क्रियां बिना। अर्थात ज्ञान को यदि क्रिया में न बदला जाए तो वह भार-रूप ही बना रहेगा। हमें इस काल-सिद्ध उक्ति का मर्म समझना है, अपने ज्ञान को कौशल में बदलना है तथा उस कौशल से अपनी प्रभाविता बढ़ानी है। इससे हम सबका प्रभाव-क्षेत्र बढ़ेगा और यही हममें से प्रत्येक को बैंक के ब्रांड एम्बेसेडर के रूप में सुप्रतिष्ठ करेगा।

आइए, हम अपना कौशल निखारें तथा एक अभिनव बैंकिंग संस्थान के रूप में यूको बैंक की छवि गढ़ने में अपनी महत भूमिका निभाएं।

साभिवादन,

(राजेन्द्र कुमार साबू)

यूको बैंक
UCO BANK

कार्यपालक निदेशक का संदेश

'यूको अनुगूँज' के माध्यम से आपको संबोधित करने का अवसर पाकर मैं हर्षित हूँ। बैंक की विगत कुछ तिमाहियों के वित्तीय परिणामों पर नजर डालते हुए मैंने नोट किया है कि हमारे बैंक में प्रति कार्मिक कारोबार तथा लाभप्रदता की स्थिति में लगातार सुधार हो रहा है। यह उत्साहवर्धक बात है। इसी के साथ हम यह भी देखते हैं कि कारोबार के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जहां कार्मिकों का एक वर्ग लगातार जूझता रहता है वहाँ एक दूसरा वर्ग आदेश-निदेश की प्रतीक्षा करता रहता है। इससे समग्र कार्यनिष्पादन प्रभावित होता है। कारोबार के लक्ष्यों को प्राप्त करना कार्मिकों के निचले स्तर से लेकर सर्वोच्च स्तर के कार्मिक का पवित्र दायित्व है। उत्पादकता बढ़ाना हमारा साझा लक्ष्य है। यदि हम सभी अपने-अपने स्तर से सक्रिय होते हैं तो कम समय तथा श्रम से बेहतर परिणाम स्वत: आ जाएंगे। किसी मशीन की कार्यशीलता उसके सभी पुर्जों की कार्यशीलता पर निर्भर करती है-किसी खास पुर्जे की कार्यशीलता पर नहीं। इसी प्रकार अपने-अपने क्षेत्र में सभी यूकोजन की सक्रिय भागीदारी से ही हमारी उत्पादकता बढ़ेगी, किसी एक वर्ग के अहर्निश लगे रहने से नहीं।

'यूको अनुगूँज' एक बहुत ही व्यंजक नाम है। यह नाम हमें याद दिलाता है कि हमारे हर प्रयास में यूको की अनुगूँज रहनी चाहिए। कार्यालय में हमारा परिवेश, हमारी वेशभूषा, ग्राहकों से हमारा व्यवहार, सहकर्मियों के प्रति हमारी सहयोग- भावना तथा उच्चाधिकारियों के प्रति हमारा उत्तरदायित्व, इन सबमें बैंक के लक्ष्यों की अनुगूंज रहनी चाहिए। हमारा सारा समारंभ बैंक के हितों की रक्षा तथा उसकी ब्रांड छवि में निखार के एकमेव उद्देश्य से प्रेरित होना चाहिए। मुझे लगता है इसी में यूको अनुगूँज - इस पद की सार्थकता है।

'यूको अनुगूँज' के माध्यम से मैं सभी यूकोजन से अनुरोध करता हूँ कि वे सभी अपने-अपने कार्यक्षेत्र में पूरे उत्तरदायित्व से सक्रिय रहें ताकि हम अपने ग्राहकों का विश्वास जीतते हुए बैंकिंग उद्योग में अपनी पहचान कायम रख सकें।

शुभकामनाएं!

(विजयकुमार एन कांबले)

महाप्रबंधक का संदेश

राजभाषा हिंदी में बैंक का काम करना हमारा सांवैधानिक दायित्व है। संघ सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा तथा प्रोत्साहन पर आधारित है। हमारी हिंदी गृहपत्रिका 'यूको अनुगूंज' कार्मिकों को हिंदी में बैंक के कामकाज के प्रति उन्मुख करने का एक प्रोत्साहनमूलक प्रयास है। इस पत्रिका के माध्यम से हम अपनी भाषा में अपने मनोभावों को पाठकों से साझा करते हैं। इसी प्रकार पत्रिका के पाठक भी विभिन्न लेखकों के विचारों से अवगत होते हैं।

कोई छोटी सी घटना, कोई छोटा-सा प्रसंग पढ़कर हम विचारों की दुनिया में खो जाते हैं। शब्द भाव बनकर मन में उतर जाते हैं। पत्रिकाओं को पढ़ने से हमारी शब्दावली समृद्ध होती है तथा वाक्य-रचना का कौशल निखरता है। यह सही है कि सोशल मीडिया के आभासी अस्तित्व में हम सब पुस्तकों तथा पत्रिकाओं से जुडने का आकर्षण खो रहे हैं। पर हाँ, पढ़ने का शौक कम नहीं हुआ है।

यूको अनुगूंज का यह अंक सूचना सुरक्षा पर केंद्रित है। इसके आलेख आपको सूचना की जरूरत तथा उसके विभिन्न आयामों से परिचित कराएंगे। राजभाषा विभाग के द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका आप सबके बीच पढ़ने तथा लिखने की संस्कृति के संवर्धन में लगी है।

मुझे विश्वास है पत्रिका का यह अंक आपको रुचिकर लगेगा।

शुभकामनाओं के साथ,

(राजेश नागर)

।। स्वागत ।।

श्री अरवमुदन कृष्ण कुमार
गैर-सरकारी निदेशक एवं गैर-कार्यपालक अध्यक्ष

श्री अश्वनी कुमार, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा
गैर-सरकारी निदेशक एवं गैर-कार्यपालक अध्यक्ष का स्वागत

।।सम्पादकीय।।

'यूको अनुगूंज' बैंकिंग, साहित्य तथा सामयिक मुद्दों पर यूकोजन के विचार अभिव्यक्ति तथा रचनात्मक क्षमता के विकास का एक मंच है। हमें प्रसन्नता है कि इस मंच का सार्थक उपयोग हो रहा है।

हम सभी इस तथ्य से बखूबी अवगत हैं कि कोई भी लक्ष्य कभी बड़ा नहीं होता बल्कि उसे पाने का जुनून और विश्वास बड़ा होता है। आज डिजिटल इंडिया के नारों से नभ गुंजायमान है और पूर्व से पश्चिम व उत्तर से दक्षिण तक देश के सुदूर कोनों तक स्मार्ट फोनों की सहज गति से पहुंच के जरिए मोबाईल, इंटरनेट तथा टैब बैंकिंग का प्रचार-प्रसार तेजी से बढ़ रहा है। एक ओर जहाँ घर बैठे बैंकिंग की सुविधाएँ बढ़ी हैं वहीं दूसरी ओर खतरे भी बढें हैं। ऐसे में सूचना सुरक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है। वित्तीय धोखाधड़ी रोजमर्रा की बात हो गयी है। ऐसे माहौल में स्वयं की सहायता तथा सूचना सुरक्षा के प्रति जागरूकता ही जन सामान्य का सुरक्षा कवच है। तदनुरूप इस अंक में यूको बैंक के मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी के साथ संवाद और सूचना सुरक्षा तथा वित्तीय प्रौद्योगिकी पर सुचिन्तित आलेख इस अंक को महत्वपूर्ण बनाते हैं।

इसके साथ-साथ हिंदी साहित्य के स्वनामधन्य हस्ताक्षर अज्ञेय तथा विक्टोरियन युग के कवि अल्फ्रेड लॉर्ड टेनिसन की आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित कविताएं पत्रिका के साहित्यिक पृष्ठभूमि को समृद्ध करती है। हमेशा की तरह यूको बैंक के स्टाफ सदस्यों द्वारा रचित कविताएं एवं लघु कहानियों के अलावा सभी स्थायी स्तंभ इस अंक की जमापूंजी हैं।

जन चेतना की दृष्टि से बहुअधीन एवं बहुप्रुन आचार्य के रूप में सुविख्यात पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा है कल्पना और आशावादिता साध्य नहीं, साधन हैं। इसी को बरकरार रखते हुए यूकोजन से अपेक्षा है कि आगामी अंकों के लिए इस रचनात्मक यात्रा में हमारे सहयात्री बनकर अपनी रचनात्मकता के माध्यम से पत्रिका को निरंतर समृद्ध व रोचक बनाने में अपना योगदान देंगे।

इस अंक पर आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

(अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी)

डिजिटल भारत में फिनटेक के प्रसार में भारतीय भाषाओं की भूमिका

आमुख लेख

सत्येन्द्र कुमार शर्मा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक, सेंट्रल स्टाफ कॉलेज, कोलकाता

भारत पारंपरिक रूप से नकदी पर निर्भर अर्थव्यवस्था रहा है, जिसमें अधिकांश लेनदेन कागजी मुद्रा के आधार पर होते रहे हैं। परंतु जब से भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में तेजी आई है, इनके डिजिटलीकरण से वित्तीय सेवाओं की मांग पर अत्यधिक तीव्रता भी आई है। इन कारकों ने कई स्टार्ट-अप को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है जिससे भारतीय स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में फिनटेक एक वृहद और मजबूत हिस्से के रूप में शामिल हुआ है। फिनटेक भारतीय उपभोक्ता और व्यवसायों के लेनदेन के तरीके को बदल रहा है। फिनटेक ने हमारे दिन-प्रतिदिन के वित्तीय लेनदेन की गति, सटीकता, सामर्थ्य, पारदर्शिता और सुविधा को बढ़ाकर आर्थिक विकास को सशक्त बनाया है। आज, फिनटेक व्यवसाय मॉडल ने व्यावहारिक रूप से निवेश, भुगतान, प्रबंधन, वित्तपोषण, बीमा और रियल एस्टेट जैसे अधिकांश क्षेत्रों को कवर किया है। फिनटेक वित्तीय प्रणालियों को अधिक मजबूत और प्रतिस्पर्धी

बनाने से लेकर बैंकिंग सेवाओं से वंचित/अंडर-बैंक आबादी के लिए वित्तीय सेवाओं तक पहुँच को गहरा करने के लिए शानदार अवसर प्रदान करता है। वर्तमान में भारत वैश्विक स्तर पर तीसरे सबसे अधिक फिनटेक स्टार्ट-अप का देश है और भारतीय स्टार्ट-अप फंडिंग में 14 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है।

फिनटेक क्या है ?

वित्तीय प्रौद्योगिकी-'फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी', जिसे फिनटेक के रूप में संक्षिप्त किया जाता है, को वित्तीय बाजारों में वित्तीय उत्पाद या सेवा प्रदान करने के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। अर्थात फिनटेक एक विशेष प्रकार की वित्तीय तकनीक है जो वित्तीय उत्पादों और सेवाओं के वितरण को विस्तारित करने, बढ़ाने, स्वचालित करने और स्केल करने के लिए अनुप्रयोगों, सेवाओं और प्रक्रियाओं में अत्याधुनिक नवाचारों का उपयोग करती है।

आज, फिनटेक नवाचारों ने ट्रेडिंग और बैंकिंग की रीतियों को बदल दिया है। उदाहरण के लिए, डिजिटल वॉलेट, भुगतान इंटरफेस, मोबाइल बैंकिंग, ई-बैंकिंग, मोबाइल ट्रेडिंग, रोबो-सलाहकार साइट और पीयर-टू-पीयर लेंडिंग साइट। जब कभी हम किसी ग्रासरी शॉप पर पेमेंट के लिए क्यूआर कोड (क्विक रिस्पांस कोड) को स्कैन करते हैं, इसमें एक फिनटेक कंपनी शामिल होती है अथवा जब आप गूगल पे या फोन पे से दोस्तों को पैसे भजते हैं तो यह भी किसी फिनटेक कंपनी की वजह से ही मुमकिन होता है। दरअसल, ऑनलाइन होने वाले हर लेनदेन के पीछे फिनटेक कंपनियां होती हैं। आज, हमारे देश में तकरीबन 7000 से ज्यादा फिनटेक स्टार्टअप हैं जो अलग-अलग सेगमेंट में कार्य कर रहे हैं।

फिनटेक का उद्भव :

पिछले दशकों में वित्तीय क्षेत्र के विकास में प्रौद्योगिकी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वित्त में प्रौद्योगिकी का पहला उदाहरण 1950 में देखा गया था, जब नकदी ले जाने के बोझ को कम करने के लिए क्रेडिट कार्ड पेश किए गए थे। इसके बाद 1960 के दशक में बैंक टेलर और शाखाओं की जगह स्वचालित टेलर मशीनों (एटीएम) का उपयोग किया गया और ग्राहकों को कई तरह की पहुँच प्रदान की गई। फिर, **1970 के दशक में** एक्सचेंज ट्रेडिंग पलोर पर **डिजि**टल स्टॉक ट्रेडिंग शुरू हुई। इंटरनेट और ई-कॉमर्स बिजनेस मॉडल ने 1990 के दशक में हमारे व्यापार करने के तरीके को क्रांतिकारी बना दिया। 21वीं सदी की शुरुआत में फिनटेक ने वित्तीय सेवाओं की भूमिका को पूरी तरह से बदल दिया।

फिनटेक कैसे कार्य करता है ?

फिनटेक उपभोक्ताओं के लिए वित्त की दुनिया को असंख्य तरीकों से बदल रहा है। फिनटेक उपभोक्ताओं या व्यवसायों के लिए वित्तीय लेन-देन को सरल बनाता है, जिससे वे अधिक सुलभ और आम तौर पर अधिक किफायती हो जाते हैं। उदाहरण के लिए आप बिना किसी बैंक में गए इंटरनेट के माध्यम से बैंक खाता खोल सकते हैं। आप खाते को अपने स्मार्टफोन से लिंक कर सकते हैं। आप अपने स्मार्टफोन को डिजिटल वॉलेट में भी बदल सकते हैं और इसका उपयोग अपने खाते में मौजूद पैसों से चीजों का भुगतान करने के लिए कर सकते हैं। फिनटेक बीमा और निवेश उद्योगों को भी तेजी

से बदल रहा है। फिनटेक ऐप्स को कार्यशील बनाने के लिए कई प्रकार की 'प्लंबिंग' आवश्यक है:

- **एपीआई:** वित्तीय एपीआई (एप्लिकेशन प्रोग्राम इंटरफेस) उपभोक्ताओं के बैंक खातों को फिनटेक ऐप्स और सेवाओं से सुरक्षित रूप से जोड़ते हैं ताकि वे वित्तीय डेटा साझा कर सकें, फंड ट्रांसफर कर सकें और अपनी पहचान सत्यापित कर सकें।
- **मोबाइल एप्लिकेशन:** अधिकांश फिनटेक कंपनियां एक मोबाइल ऐप पेश करती हैं ताकि उपयोगकर्ता किसी भी समय अपने फंड और जानकारी तक पहुंच सकें। चाहे वह डिजिटल बैंकिंग ऐप हो, वित्तीय प्रबंधन उपकरण हो, या निवेश मंच हो।
- **वेब-आधारित समाधान:** मोबाइल ऐप की पेशकश के अलावा कुछ फिनटेक कंपनियां एक वेब-आधारित समाधान भी प्रदान करते हैं जहां उपयोगकर्ता वेब ब्राउजर के माध्यम से लॉग इन कर सकते हैं और वही कार्यक्षमता निष्पादित कर सकते हैं।

भारत जैसे देश के लिए फिनटेक किस प्रकार उपयोगी है:

भारत में हाल के वर्षों में फिनटेक में जबरदस्त वृद्धि हुई है, जिसने देश के डिजिटल वित्तीय परिदृश्य को बदल दिया है। देश की बड़ी संख्या में बिना बैंक वाले और वंचित लोगों, स्मार्टफोन की बढ़ती पहुँच, जन-धन योजना, आधार, यूपीआई जैसी सरकारी डिजिटल पहल और एक संपन्न स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र ने फिनटेक बूम को उत्प्रेरित किया है। कोविड-19 महामारी ने डिजिटल अपनाने को और बढ़ावा दिया क्योंकि उपभोक्ताओं ने संपर्क रहित और सुविधाजनक वित्तीय सेवाओं की मांग की। कम आय वाले वर्गों के लिए सस्ती वित्तीय सेवाओं तक पहुँच की कमी ने भारत में वित्तीय समावेशन को बाधित किया है। भले ही शहरी आबादी के लिए डिजिटल भुगतान सामान्य हो गए हैं, लेकिन अभी भी आबादी का एक बड़ा हिस्सा इससे अछूता है। हालाँकि भारत में स्मार्टफोन की पहुँच 71% तक पहुँच गई, लेकिन इंटरनेट की पहुँच लगभग 48% ही है, जो डिजिटल भुगतान की पहुँच और पहुँच की कमी को दर्शाता है। उच्च लागत और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे ने पारंपरिक रूप से बैंकों को ग्रामीण बाजारों की सेवा करने में बाधा पहुंचाई है। फिनटेक इनोवेटर्स वैकल्पिक डेटा, उन्नत एनालिटिक्स और तकनीक का रचनात्मक उपयोग करके इन बाधाओं को दूर कर रहे हैं।

भारत में फिनटेक के विकास के प्रमुख घटक :

- व्यापक पहचान औपचारीकरण (आधार के माध्यम से 1.2 बिलियन नामांकन)
- जन-धन योजना जैसे प्रयासों के माध्यम से बैंकिंग पहुँच में वृद्धि (1 बिलियन से अधिक बैंक खाते)
- व्यापक स्मार्टफोन पहुँच (1.2 बिलियन से अधिक स्मार्टफोन उपभोक्ता)
- भारत में व्यय योग्य आय में वृद्धि
- भारत सरकार द्वारा यूपीआई और डिजिटल इंडिया जैसे प्रमुख प्रयास
- मध्यम वर्ग का व्यापक विस्तार: वर्ष 2030 तक भारत की मध्यम वर्गीय आबादी में 140 मिलियन नए परिवार और उच्च-आय वर्ग की आबादी में 21 मिलियन नए परिवार जुड़ जाएंगे, जो देश के फिनटेक बाज़ार में मांग और विकास को गति प्रदान करेंगे।

भाषा संबंधी बाधाओं को पार कर सेवा प्रदान करना :

भारत एक विविधतापूर्ण देश है, जिसमें 22 अलग-अलग आधिकारिक भाषाओं, 122 अन्य भाषाओं और 270 मातृभाषाओं के साथ समृद्ध भाषाई परिदृश्य हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भाषा संबंधी बाधा डिजिटल वित्तीय समावेशन को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण बाधा है। डिजिटल डिवाइड- इंडिया इनइक्वैलिटी रिपोर्ट 2022 के अनुसार अमीर और गरीब तबके के बीच डिजिटल भुगतान अपनाने में भारी असमानता है। इस विभाजन को दूर करने के लिए न केवल वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है, बल्कि ग्राहकों के साथ उनकी मातृभाषा में संवाद करना भी है। भारत जैसे बहुभाषी देश में बैंकिंग सेवाओं को स्थानीय बनाने के लिए एक मापनीय भाषा प्रौद्योगिकी समाधान की आवश्यकता है जो सांस्कृतिक और भाषाई बारीकियों पर विचार करते हुए हर भारतीय भाषा की आवश्यकता को पूरा कर सके। साथ ही, डिजिटल वित्तीय समावेशन के संदर्भ में भाषा स्थानीयकरण विभिन्न समुदायों के बीच विश्वास बनाने और अपनाने को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग का उपयोग भाषा प्रौद्योगिकी समाधान विकसित करने के लिए किया जा सकता है जो अनुवाद और स्थानीयकरण प्रक्रिया को स्वचालित करता है। इन समाधानों को न केवल भाषाई सटीकता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, बल्कि एक सहज उपयोगकर्ता अनुभव सुनिश्चित करने के लिए सांस्कृतिक बारीकियों पर भी विचार करना चाहिए।

फिनटेक वित्तीय समावेशन के लिए अंतिम मील तक पहुँचने का एक उपकरण :

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में वित्तीय सेवाओं तक पहुँच पारंपरिक

रूप से लाखों लोगों के लिए एक चुनौती रही है, खासकर दूरदराज के इलाकों में या सीमित संसाधनों वाले लोगों के लिए। हालाँकि, फिनटेक एक गतिशील शक्ति के रूप में उभरा है, जिसने पूरे भारत में वित्तीय समावेशन की सीमाओं का विस्तार किया है। एक आंकड़े के अनुसार वित्त वर्ष 2024 में यूपीआई लेनदेन 2022-23 में 84 बिलियन की तुलना में बढ़कर 131 बिलियन हो गया। दरअसल, भारत में यूपीआई लेनदेन ने पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में वित्तीय वर्ष 2023-24 में वॉल्यूम में रिकॉर्ड 57 प्रतिशत और मूल्य में 44 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। ये आंकड़े वित्तीय लेनदेन करने के तरीके में एक बड़े बदलाव और देश भर में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने और भुगतान सहित नए युग के फिनटेक उत्पादों को अंतिम मील तक ले जाने में फिनटेक कंपनियों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हैं। फिनटेक ने कई अन्य उत्पादों के साथ-साथ उपयोगकर्ता के अनुकूल और सुलभ डिजिटल भुगतान समाधान प्रदान करके महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। फ़िनटेक की दख़ल वित्तीय शिक्षा और साक्षरता में भी हो रही है। यह वित्तीय शिक्षा के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान कर लाखों लोगों को सशक्त बना रही हैं। ये प्लेटफॉर्म टूल, ट्यूटोरियल और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जिससे व्यक्तियों को वित्तीय निर्णय लेने में मदद मिलती है। फिनटेक वह पुल बन गया है जो व्यक्तियों, बिना बैंक वाले और कम बैंक वाले लोगों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ता है।

उपसंहार:

भारत के आर्थिक विकास के भव्य ताने-बाने में फिनटेक परिवर्तन के एक धागे के रूप में उभरा है, जो वित्तीय समावेशन के प्रति लाखों लोगों की आकांक्षाओं को एक साथ बुन रहा है। फिनटेक कंपनियों ने वित्तीय प्रणालियों को अधिक कुशल और प्रतिस्पर्धी बनाकर, वंचित आबादी के लिए वित्तीय सेवाओं तक पहुँच को व्यापक बनाकर अवसर प्रदान किए हैं। जैसे-जैसे फिनटेक विकसित और नवाचार करना जारी रखता है, यह वित्तीय समावेशन में और भी अधिक प्रगति का वादा करता है। पारंपरिक वित्तीय संस्थानों और सरकारी निकायों के साथ साझेदारी करके फिनटेक भारत को व्यापक वित्तीय सशक्तिकरण के मार्ग पर आगे बढ़ा रहा है। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर तथा स्थानीय भाषाओं का उपयोग करके भाषा की खाई को पाटा जा सकता है और समाज के सभी वर्गों को डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग लेने के लिए सशक्त बनाया जा सकता है। डिजिटल बैंकिंग की सफलता और ग्राहक की संतुष्टि के लिए आवश्यक है कि तकनीकी आधारित सभी बैंकिंग उत्पादों को उपभोक्ताओं की ही भाषा में मुहैया कराया जाए ताकि वे सहज रूप में इन डिजिटल मंचों का उपयोग कर लेनदेन कर सकें। वित्तीय सेवाओं तक पहुँच का विस्तार करने की सामूहिक प्रतिबद्धता के साथ फिनटेक एक ऐसे भविष्य को आकार दे रहा है जहाँ हर भारतीय के पास अधिक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य के निर्माण के लिए सार्थक उपकरण और अवसर होंगे। ❑

वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक): चुनौतियां व अवसर

विकास गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
यूको बैंक, डिगियाना शाखा

फिनटेक- फ़ाइनेंशियल टेक्नोलॉजी का संक्षिप्त रूप है। वित्तीय कार्यों में प्रौद्योगिकी के उपयोग को फिनटेक कहा जाता है। यह पारम्परिक वित्तीय सेवाओं एवं विभिन्न कंपनियों तथा व्यापार में वित्तीय पहलुओं के प्रबंधन में आधुनिक तकनीक का क्रियान्वयन है। जिसके माध्यम से वित्तीय सेवाओं में सुधार एवं स्वायत्तता लाने का प्रयास किया जाता है। डिजिटल पेमेंट, डिजिटल ऋण, बैंक टेक, इंश्योर -टेक, रेगटेक, क्रिप्टोकर्रेंसी आदि फिनटेक के प्रमुख घटक हैं। फिनटेक के परिचालन में कई अलग-अलग क्षेत्र और उद्योग -उदाहरणत: शिक्षा, खुदरा-बैंकिंग, निधि जुटाना एवं गैर लाभकारी कार्य, निवेश-प्रबंधन इत्यादि भी शामिल हैं।

फिनटेक -नवोन्मेक के सक्रिय क्षेत्र

क्रिप्टोकर्रेंसी और डिजिटल कैश

ब्लॉकचैन तकनीक : इस तकनीक के तहत किसी केंद्रीय बहीखाते के बजाय कंप्यूटर नेटवर्क पर लेन -देन के रिकॉर्ड को सुरक्षित रखा जाता है ।

स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट : इसके तहत कंप्यूटर प्रोग्राम के माध्यम से अक्सर ब्लॉकचैन का उपयोग करते हुए उपभोगताओं एवं विक्रेताओं के मध्य अनुबंधों को स्वचालित रूप से निष्पादित किया जाता है।

ओपन -बैंकिंग : यह एक ऐसी प्रणाली है जिसके तहत बैंक नए एप्लीकेशन और सेवाओं को विकसित करने हेतु तीसरे पक्ष को अपने एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस (ए पी आई) की सुविधा प्रदान करते हैं। इसके तहत राष्ट्रीयकृत बैंकों को फिनटेक से प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सांझेदारी करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

इंश्योर-टेक -इसके तहत प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से बीमा उद्योग को सरल एवं कारगर बनाने का प्रयास किया गया है।

रेगटेक: रेगटेक रेगुलेटरी टेक्नोलॉजी का संक्षिप्त रूप है। इसका उपयोग व्यवसायों को कुशलतापूर्वक एवं कारगर प्रक्रिया से औद्योगिक क्षेत्र के नियमों का पालन करने में सहायक है ।

साइवर सुरक्षा : देश में साइबर आक्रमण की घटनाओं की संख्या में वृद्धि और विकेंद्रीकृत डाटा के कारण फिनटेक एवं साइबर सुरक्षा के विषय एक दूसरे से संबंधित हो गए हैं ।

फिनटेक की पार्श्वभूमि

सन 2009 में दो संस्थानों की स्थापना के साथ ही भारत में फिनटेक की यात्रा प्रारम्भ हुई। भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम -खुदरा भुगतान एवं निपटान को आधुनिक बनाने हेतु भारत में

एटीएम नेटवर्क का अधिग्रहण करने वाली प्रथम संस्था थी। दूसरा चरण था -भारत में विशिष्ट पहचान प्राधिकरण की स्थापना।

इंडिया स्टैक : इंडिया स्टैक एपीआई का एक सेट जो सरकारी एवं निजी क्षेत्र में कैशलेस एवं पेपरलेस तकनीक को लागू करने की अनुमति देता है।

भारत में फिनटेक के प्रमुख घटक

विशिष्ट पहचान संख्या -यूनिफाइड आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया (यू आई डी ए आई) इंडिया स्टैक बनता है, जिसे आधार स्टैक भी कहा जाता है, यह किसी व्यक्ति की विशिष्ट पहचान संख्या होती है जो उसकी बायोमेट्रिक रीडिंग से जुड़ी होती है।

ई के वाई सी- ई के वाई सी परियोजना व्यवसायों को तत्काल ग्राहक सत्यापन प्राप्त करने की अनुमति देती है।

ए ई पी एस - ए ई पी एस- : आधार-इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम सरकारी अधिकारों और बैंक टू बैंक हस्तांतरण की अनुमति प्रदान कर खुदरा दुकानों से आवश्यक वस्तुओं की कैशलेस खरीद के उपयोग में लाया जा सकता है जिससे वित्तीय समावेशन का विस्तार हुआ है ।

यू पी आई (यूनिफाइड पेमेंट इंटरफ़ेस)- एक भुगतान अनुरोध और ग्राहक किसी लाभार्थी को धन भेजने एवं ग्राहकों से भुगतान अनुरोध एकत्रित करने हेतु भुगतान इंटरफ़ेस का उपयोग कर सकते हैं।

ई-साइन : ई-साइन एक अ पी आई के माध्यम से सक्षम प्रणाली है जो आधार-कार्डधारक को दस्तावेज़ों पर इलेक्ट्रॉनिक रूप से हस्ताक्षर करने की सुविधा प्रदान करता है। इसे बायोमेट्रिक-रीडिंग एवं एक ओ टी पी के माध्यम से प्रमाणित किया जाता है।

डिजीलॉकर: डिजिलॉकर का उपयोग दस्तावेज़ों के लिए भारत सरकार के भण्डार-संसाधन के रूप में किया जाता है।

डिजिटल -सिग्नेचर : डिजिटल -सिग्नेचर वह क्षमता प्रदान करता है जो व्यक्तियों को बिना पेन या पेपर के किसी भी संस्था के साथ एलेक्ट्रॉनिक रूप से अनुबंध पर हस्ताक्षर करने की अनुमति देता है।

डिजिटल-पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डी पी आई) : डी पी आई डिजिटल समाधानों को सन्दर्भित करता है जो सहयोग, वाणिज्य और शासन जैसे बुनियादी कार्यों को सक्षम बनाता है जो सार्वजानिक और निजी सेवा वितरण के लिए महत्वपूर्ण है।

डिजिटल-पब्लिक गुड्स (डी पी जी)- डी पी जी ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर, ओपन डेटा, ओपन ऐ आई मॉडल, ओपन स्टैण्डर्ड एवं ओपन कंटेंट को सन्दर्भित करता है जो गोपनीयता और अन्य सर्वोत्तम प्रयासों का पालन करता है। यह बुनियादी ढांचे के निर्माण -हेतु एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

एफ एस सी ए (फाइनेंसियल सर्विसेज कंट्रोलिंग अथॉरिटी)- एफ एस सी ए की स्थापना सन 2019 के अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण अधिनियम के अंतर्गत की गयी थी।

भारत में एफ एस सी ए वित्तीय वस्तुओं, वित्तीय सेवाओं एवं वित्तीय संस्थानों के निर्माण और विनियम का प्रभारी एकल निकाय है।

भारत का पहला अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र गिफ्ट आई एफ एस सी है। आई एफ सी वित्तीय उत्पादों, वित्तीय सेवाओं और वित्तीय संस्थानों के विकास और विनियमन के लिए एक एकीकृत प्राधिकरण के रूप में कार्य करता है।

डेटा और मानक: लघु एवं छोटे व्यवसाय अब डिजिटल बुनियादी ढांचे की बदौलत अपने डेटा को पुन: प्राप्त और उपयोग कर सकते हैं। इस ओपन बैंकिंग सिस्टम के कार्य

करने हेतु एक मानक भाषा की आवश्यकता होगी जिस प्रकार यू पी आई ने भुगतान प्रोटोकॉल बनाया है।

नेशनल पेमेंट्स कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया (एन पी सी आई) उधारदाताओं एवं मार्केटप्लेस को जोड़ने हेतु एक ओपन क्रेडिट इनबलमेंट नेटवर्क (ओ सी ई एन) लांच कर रहा है।

डिजिटल इंडिया की परिवर्तनकारी पहलों ने शासन में उपयोग किए जाने वाले नवीन फिनटेक समाधानों का मार्ग प्रशस्त किया है। फिनटेक द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक विकास में गति प्रदान की जा रही है। इसमें जल-जीवन मिशन कार्यक्रम का लक्ष्य प्रत्येक ग्रामीण परिवार तक कार्यात्मक घेरलू जल - कनेक्शन उपलब्ध करवाना है ।

फिनटेक की चुनौतियां

साइबर - आक्रमण : प्रक्रियाओं का स्वचालन और डेटा का डिजिटलीकरण फिनटेक प्रणाली को हैकर्स के हमलों के प्रति सुभेद्य बनाता है।

डेटा- गोपनीयता की समस्या : उपभोक्ताओं के सन्दर्भ में साइबर -आक्रमण के साथ-साथ महत्वपूर्ण, व्यक्तिगत और वित्तीय डाटा का दुरूपयोग भी एक बड़ी चिंता का कारण है।

विनियमन में कठिनाई : वर्तमान समय में तीव्र गति से उभरते फिनटेक क्षेत्र (विशेष रूप से क्रिप्टोकरेंसी) का विनियमन भी एक बड़ी समस्या है। विश्व के अधिकांश क्षेत्रों में फिनटेक के विनियमन हेतु कोई विशेष प्रावधान नहीं है। ऐसे में विनियमन के इस अभाव ने इस क्षेत्र में घोटाले और धोखाधड़ी की घटनाओं को भी जन्म दिया है। फिनटेक द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की विविधता के कारण इस क्षेत्र की समस्याओं के लिए कोई एकल और व्यापक समाधान ढूंढ़ना अत्यंत कठिन है ।

भारत में फिनटेक का उदय

नवीन भुगतान तंत्र एवं इंटरफ़ेस- उदाहरणत: तत्काल भुगतान सेवा (आई एम पी एस), यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफ़ेस (यू पी आई), भारत इंटरफ़ेस फॉर मनी (भीम ऐप) इत्यादि के प्रचलन के कारण हाल ही के वर्षों में भारत के भुगतान-ढांचे में वांछित सुधार हुआ है।

भारत सरकार की **मेक इन इंडिया एवं डिजिटल इंडिया** जैसी पहलों ने भी फिनटेक को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विगत कुछ वर्षों में **कैशलेस अर्थव्यवस्था** की स्थापना हेतु इलेक्ट्रॉनिक भुगतान को प्रोत्साहन दिया जा रहा है जो कि फिनटेक के प्रचलन में एक सराहनीय कदम है।

सरकार के अन्य उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण निर्णय - उदाहरणत: **विमुद्रीकरण और जी एस टी** ने देश भर में फिनटेक- परियोजनाओं के विस्तार हेतु अनेकों अवसर प्रदान किए हैं।

पे टी एम, फ़ोन-पे, मोबिक्विक एवं अन्य सफल डिजिटल प्लेटफॉर्म आगमन से डिजिटल भुगतान प्रणाली निर्विवाद रूप से भारतीय फिनटेक बाजार की ध्वजवाहक रही है।

इसके अतिरिक्त **फेसबुक एवं रिलायंस -जियो** के मध्य वैश्विक सांझेदारी ने भारत के डिजिटल भुगतान क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव डाला है ।

भारत में फिनटेक के विकास के मुख्य कारक

व्यापक पहचान औपचारीकरण -आधार के माध्यम द्वारा 1.2 बिलियन नामांकन दर्ज किए गए हैं ।

जन -धन योजना जैसे प्रयासों के द्वारा बैंकिंग की पहुँच में वृद्धि हुई है। इसका स्पष्ट प्रमाण लगभग एक बिलियन से अधिक बैंक खातों का खुलना है।

व्यापक स्मार्ट फ़ोन प्रयोग -लगभग 1 बिलियन से अधिक स्मार्ट फ़ोन उपभोक्ता।

भारतवर्ष में जनता की व्यय-योग्य आय में वृद्धि सरकार द्वारा **यू पी आई एवं डिजिटल इंडिया** जैसे प्रमुख प्रयास।

मध्यम वर्ग का व्यापक विस्तार : वर्ष 2030 तक भारत में मध्यम वर्गीय आबादी में 140 मिलियन नए परिवार और उच्च-आय वर्ग की आबादी में 21 मिलियन नए परिवार जुड़ जायेंगे, जो देश के फिनटेक बाजार में मांग को और अधिक गति प्रदान करेंगे।

फिनटेक से जुडी संभावनाएं

व्यापक वित्तीय-समावेशन : वित्तीय प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से पारम्परिक वित्तीय और बैंकिंग -मॉडल से वित्तीय-समावेशन से जुडी चुनौतियों को दूर किया जा सकता है।

एम एस एम ई को वित्तीय सहायता प्रदान करना : वर्तमान समय में देश के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों (एम एस एम ई) को वित्तीय मदद प्रदान करने में फिनटेक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (आई एफ सी) की एक रिपोर्ट के अनुसार एम एस एम ई क्षेत्र के लिए आवश्यक एवं उपलब्ध पूँजी का अंतर लगभग 397 बिलियन अमेरिकन डॉलर आँका गया है। ऐसे में एम एस एम ई सेक्टर में फिनटेक का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है जिसमें इस क्षेत्र में पूँजी की कमी को दूर करने की क्षमता भी है। कई फिनटेक स्टार्टअप्स द्वारा सुलभ एवं त्वरित ऋण उपलब्ध करवाए जाने पर एम एस एम ई सेक्टर को बैंकों की जटिल कागज़ी प्रक्रिया एवं अत्यधिक-समय व्यय करने वाली औपचारिकताओं से राहत मिल सकेगी।

ग्राहक-अनुभव और पारदर्शिता में सुधार: फिनटेक स्टार्टअप्स सुविधा, पारदर्शिता, व्यक्तिगत और व्यापक पहुँच तथा उपयोग में सुलभता जैसी महत्वपूर्ण सुविधाएं प्रदान करते हैं, जो ग्राहकों को सशक्त बनाने में सहायता प्रदान करते हैं।

फिनटेक उद्योग द्वारा **जोखिम-आकलन** हेतु अद्वितीय एवं नवीन-मॉडल का विकास किया गया है। बिग-डेटा, मशीन-लर्निंग, ऋण-जोखिम में निर्धारण हेतु वैकल्पिक डेटा का लाभ उठाकर एवं सीमित क्रेडिट -इतिहास वाले ग्राहकों के लिए क्रेडिट-स्कोर विकसित कर देश में वित्तीय सेवाओं के विस्तार में सहायक सिद्ध होंगे।

फिनटेक के रुझान

सन् 2022 में इस वृद्धि को कई प्रचलित प्रवृतियों द्वारा परिभाषित किया गया है:

ब्लॉकचैन : विकेंद्रीकृत -लेनदेन की अनुमति देने वाली ब्लॉकचैन की तकनीक सन् 2022 में और अधिक विकसित हुई। अधिक से अधिक उद्योग उन्नत डेटा-एन्क्रेप्सन की ओर आकर्षित हुए हैं।

अर्टिफिशियल-इंटेलिजेंस (ए-आई) व मशीन-लर्निंग (एम एल)-ए-आई और एम एल टेक्नोलॉजी के परिणामस्वरूप क्लाइंट सेवाओं को पुन: परिभाषित किया गया है। ए-आई और एम एल व्यवसायों की लागत कम करने, ग्राहक-मूल्य में सुधार लाने एवं धोखाधड़ी का पता लगाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

भविष्य की राह

साइबर-अपराधियों से सुरक्षा : वर्तमान में भारत साइबर-आक्रमण के विरुद्ध सुरक्षात्मक एवं आक्रामक-दोनों प्रकार की क्षमताओं के लिए लगभग संपूर्ण रूप से आघात पर ही निर्भर करता है। देश के विभिन क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी की स्वीकारिता एवं इसकी पहुँच में व्यापक वृद्धि को देखते हुए भारत के लिए इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना अति-आवश्यक है।

उपभोगता -जागरूकता : तकनीकी सुरक्षा उपायों की स्थापना के साथ फिनटेक के लाभ एवं साइबर-हमले से बचाव के सन्दर्भ में जागरूकता फैलाने हेतु ग्राहकों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित किये जाने से भी फिनटेक के लोकतंत्रीकरण में भी सहायता प्राप्त होगी।

डेटा -सुरक्षा अधिनियम : "आर बी आई द्वारा इस क्षेत्र में तकनीक के प्रभावों की समीक्षा-हेतु फिनटेक सैंडबॉक्स की स्थापना का निर्णय लिया जाना इस दिशा में सकारात्मक कदम है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में आवश्यकताओं के अनुरूप फिनटेक भारतीय -आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त चुनौतियों के लिए उपयुक्त समाधान उपलब्ध करवाता है। फिनटेक में बीमा, निवेश, प्रेषण इत्यादि जैसी अन्य वित्तीय सेवाओं में व्यापक परिवर्तन व नवोन्मेष लाने की क्षमता है। चीन को पछाड़ते हुए भारत एशिया में फिनटेक के सबसे विशाल बाजार के रूप में उभरा है।

वर्तमान समय में 'फिनटेक' भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे अधिक संपन्न क्षेत्रों -व्यापार समृद्धि एवं रोज़गार-सृजन ,दोनों में ही अग्रसर है। 'फिनटेक द्वारा न केवल वित्तीय प्रणाली में पारदर्शिता स्थापित हुई है, अपितु वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों की भी सकल प्राप्ति हुई है। इक्कीसवीं सदी में फिनटेक शब्द को वित्तीय संस्थानों के **बैक-एन्ड सिस्टम** में उपयोग की जाने वाली तकनीक का वर्णन करने हेतु गढ़ा गया है।

हालाँकि इस क्षेत्र में विनियमन के दौरान यह भी सुनिश्चित करना अति-आवश्यक है कि यह सभी प्रयास इसके विकास में सहायक हों। भारत में 'फिनटेक के विकास के सन्दर्भ में आर बी आई ने ग्राहक-हित में विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए है . सभी फिनटेक-कम्पनियों को इन नियमों का कड़ाई से पालन करना अनिवार्य है।

अभी कुछ समय पूर्व ही आर बी आई द्वारा पेटीएम पेमेंट बैंक को नियमों की अवहेलना के कारण दिनांक 29 फरवरी से इसे जनता से जमा राशि स्वीकार करने, प्री-पेड इंस्टरूमेंट्स,वालेट्स और फ़ास्ट-टैग से वर्जित कर दिया है। ऐसा पेटीएम पेमेंट बैंक द्वारा के .वाई सी नियमों का पालन न करने से हुआ है।

यद्यपि इक्कीसवीं सदी तकनीकी नवाचार का युग है,तथापि फिनटेक कम्पनियों को नवपरिवर्तन के इस मार्ग पर चलते हुए नियामक ढांचे का पालन करना भी सुनिश्चित करना होगा।अनुपालन -संस्कृति को केवल एक नौकरशाही प्रक्रिया एवं बाधा न मान कर वित्तीय प्रणाली की अखंडता,स्थिरता एवं विश्वसनीयता का सशक्त प्रहरी समझा जाना अनिवार्य है। फिनटेक कम्पनियों को अपने व्यवसाय में नवीनीकरण के साथ-साथ अनुपालन, पारदर्शिता एवं नैतिक आचरण के मूल्यों को अपनाकर नियामक संस्थाओं, निवेशकों एवं ग्राहकों का विश्वास जीतना होगा। ❑

सूचना सुरक्षा

श्रवण कुमार मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंन्धक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, पटना

सूचना सुरक्षा, जिसे अक्सर इन्फोसेक के रूप में जाना जाता है, उन उपकरणों और प्रक्रियाओं को शामिल करती है जिनका उपयोग संगठन जानकारी की सुरक्षा के लिए करते हैं । इसमें कुछ सेटिंग्स शामिल हैं जो अनधिकृत लोगों को व्यावसायिक या व्यक्तिगत जानकारी तक पहुंचने से रोकती हैं। सूचना सुरक्षा संगठनों को डिजिटल और एनालॉग जानकारी की सुरक्षा करने में सक्षम बनाती है । सूचना सुरक्षा संवेदनशील व्यावसायिक जानकारी को संशोधन, व्यवधान, विनाश और निरीक्षण से बचाने के लिए डिजाइन और तैनात की गई प्रक्रियाओं और उपकरणों को संदर्भित करता है। संगठन कई कारणों से सूचना सुरक्षा लागू करते हैं। सूचना सुरक्षा का मुख्य उद्देश्य आम तौर पर कंपनी की जानकारी की गोपनीयता, सत्यनिष्ठा और उपलब्धता सुनिश्चित करने से संबंधित है । चूंकि सूचना सुरक्षा कई क्षेत्रों को कवर करता है, इसलिए इसमें अक्सर विभिन्न प्रकार की सुरक्षा का कार्यान्वयन शामिल होता है। सूचना सुरक्षा और साइबर सुरक्षा में अक्सर भ्रम पैदा होता है। इन्फोसेक साइबर सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन यह विशेष रूप से डेटा सुरक्षा के लिए डिजाइन की गई प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है। सूचना सुरक्षा सूचना जोखिमों को कम करके सूचना की सुरक्षा करने का अभ्यास है । इसमें सूचना प्रणालियों और इन प्रणालियों द्वारा संसाधित, संग्रहीत और प्रसारित जानकारी को अनधिकृत पहुंच, उपयोग, प्रकटीकरण, व्यवधान, संशोधन या विनाश से सुरक्षा शामिल है ।

सूचना सुरक्षा एक बढ़ता हुआ और विकसित होने वाला क्षेत्र है जो नेटवर्क और बुनियादी ढांचे की सुरक्षा को कवर करता है । यह सूचना जोखिम प्रबंधन का हिस्सा है। इसमें आम तौर पर डेटा तक अनधिकृत या अनुचित पहुंच को रोकना या कम करना शामिल है । इसमें ऐसी घटनाओं के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के उद्देश्य से की गई कार्रवाइयां भी शामिल हैं। इसका लक्ष्य ग्राहक संबंधी विवरण, वित्तीय आंकड़ें या बौद्धिक संपदा जैसे महत्वपूर्ण आंकड़ों की सुरक्षा और गोपनीयता को सुनिश्चित करना है।

सूचना सुरक्षा के सिद्धांत

सूचना सुरक्षा के तीन मूल सिद्धांत हैं - गोपनीयता, सत्यनिष्ठा और उपलब्धता। सूचना सुरक्षा कार्यक्रम के प्रत्येक तत्व को इनमें से एक या अधिक सिद्धांतों को लागू करने के लिए डिजाइन किया जाता है । इन्हें संयुक्त रूप से सीआईए ट्रायड कहा जाता है । गोपनीयता, सत्यनिष्ठा और उपलब्धता की सीआईए ट्रायड सूचना सुरक्षा के केंद्र में है ।

गोपनीयता (Confidentiality)

गोपनीयता उपाय सूचना के अनधिकृत प्रकटीकरण को रोकने के लिए डिजाइन किया जाता है। गोपनीयता सिद्धांत का उद्देश्य व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित रखना है और यह सुनिश्चित करना है कि यह केवल उन व्यक्तियों के लिए दृश्यमान और पहुंच योग्य है जिनके पास यह है या उन्हें अपने संगठनात्मक कार्यों को करने के लिए इसकी आवश्यकता है ।

संक्षेप में कहें तो जानकारी केवल अधिकृत पार्टियों को ही उपलब्ध होनी चाहिए।

सत्यनिष्ठा (Integrity)

इसमें डेटा में अनधिकृत परिवर्तनों (परिवर्धन, विलोपन, परिवर्तन आदि) के विरुद्ध सुरक्षा शामिल है । सत्यनिष्ठा का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि डेटा सटीक और विश्वसनीय है और दुर्भावनापूर्ण भाव से व गलत तरीके से संशोधित नहीं किया गया है ।

उपलब्धता (Availability)

उपलब्धता का अर्थ उपयोगकर्ता को डेटा किसी भी समय पूरी तरह से उपलब्ध कराने की क्षमता की सुरक्षा है। उपलब्धता का उद्देश्य प्रौद्योगिकी अवसंरचना, अनुप्रयोगों और डेटा को तब उपलब्ध कराना है जब किसी संगठनात्मक प्रक्रिया के लिए या किसी संगठन के ग्राहकों के लिए उनकी आवश्यकता हो । संक्षेप में कहें तो विफलताओं के दौरान भी (न्यूनतम या बिना किसी व्यवधान के) जानकारी अधिकृत पक्षों के लिए सुलभतापूर्वक उपलब्ध रहनी चाहिए ।

सूचना सुरक्षा बनाम साइबर सुरक्षा

सूचना सुरक्षा दायरा और उद्देश्य दोनों में साइबर सुरक्षा से भिन्न है । दोनों शब्दों को अक्सर एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है, लेकिन अधिक सटीक रूप से, साइबर सुरक्षा सूचना सुरक्षा की एक उपश्रेणी है । सूचना सुरक्षा एक व्यापक क्षेत्र है जो भौतिक सुरक्षा, डेटा एनक्रिप्सन और नेटवर्क सुरक्षा जैसे कई क्षेत्रों को कवर करता है । साइबर सुरक्षा मुख्य रूप से प्रौद्योगिकी से संबंधित खतरों को रोकने या इनके प्रभाव को कम करने से संबंधित है। इसके अतिरिक्त डेटा सुरक्षा भी एक प्रमुख विषय है, जो किसी संगठन के डेटा को अनधिकृत व्यक्तियों/ संस्थाओं की पहुँच से बचाने पर केंद्रित है ।

सूचना सुरक्षा नीति

सूचना सुरक्षा नीति (आईएसपी) नियमों का एक समूह है जो सूचना प्रद्यौगिकी से संबंधित संपत्तियों का उपयोग करते समय व्यक्तियों का मार्गदर्शन करता है। कंपनियां यह सुनिश्चित करने के लिए सूचना सुरक्षा नीतियां बना सकती हैं कि स्टाफ और अन्य उपयोगकर्ता सुरक्षा प्रोटोकॉल और प्रक्रियाओं का पालन करें । सुरक्षा नीतियों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि केवल अधिकृत उपयोगकर्ता ही संवेदनशील प्रणालियों और सूचनाओं तक पहुंच सकें। एक प्रभावी सुरक्षा नीति बनाना और अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाना सुरक्षा खतरों को रोकने और कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । अपनी नीति को वास्तव में प्रभावी बनाने के लिए कंपनी में बदलावों, नए खतरों, पिछली सुरक्षा उल्लंघनों से निकाले गए निष्कर्षों और सुरक्षा प्रणालियों और उपकरणों में बदलाव के आधार पर इसे बार-बार अपडेट करते रहना चाहिए। सूचना सुरक्षा रणनीति को व्यावहारिक और उचित बनाया जाना चाहिए। संगठन के भीतर विभिन्न विभागों की जरूरतों और तात्कालिकता को पूरा करने के लिए एक अनुमोदन प्रक्रिया के साथ अपवादों की एक प्रणाली को कार्यशील रखना आवश्यक है, जो विभागों या व्यक्तियों को विशिष्ट परिस्थितियों में नियमों से विचलन करने में सक्षम बनाता है।

मुख्य सूचना सुरक्षा खतरे

सूचना सुरक्षा खतरों की सैकड़ों श्रेणियां हैं। कुछ प्रमुख खतरे निम्नलिखित हैं जो किसी भी संस्था की सुरक्षा टीमों के लिए चुनौती हैं।

असुरक्षित या खराब सुरक्षित प्रणालियाँ

तकनीकी विकास के कारण अक्सर सुरक्षा उपायों में समझौता करना पड़ता है । कुछ मामलों में सुरक्षा को ध्यान में रखे बिना ही सिस्टम विकसित किए जाते हैं और संगठन/संस्थान में विरासत प्रणाली के रूप में परिचालन में रहते हैं। संगठनों को ऐसे प्रणालियों की पहचान करनी चाहिए और उन्हें सुरक्षित या पैच करके या उन्हें अलग करके खतरे को कम करना चाहिए।

सोशल मीडिया के माध्यम से हमले

कई लोगों के पास सोशल मीडिया अकाउंट होते हैं जहां वे अक्सर अनजाने में अपने बारे में बहुत सारी जानकारी साझा करते हैं । हमलावर सीधे सोशल मीडिया के माध्यम से हमले शुरू कर सकते हैं, जैसे सोशल मीडिया संदेशों के माध्यम से मैलवेयर भेज कर नुकसान कर सकते हैं ।

सोशल इंजीनियरिंग

सोशल इंजीनियरिंग में ईमेल और संदेश भेजा जाता है जो उपयोगकर्ताओं को ऐसे कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं जो उनकी सुरक्षा से समझौता कर सकते हैं। इसमें जिज्ञासा, तात्कालिकता या भय जैसे मनोवैज्ञानिक ट्रिगर का उपयोग करते हुए उपयोगकर्ताओं को धोखा दिया जाता है। चूंकि सोशल इंजीनियरिंग संदेश का स्रोत विश्वसनीय प्रतीत होता है इसलिए लोगों द्वारा इसका अनुपालन करने की अधिक संभावना होती है। इससे निजी व संस्थागत जानकारी का दुरुपयोग हो सकता है । उदाहरण के लिए कोई लिंक भेजना, जिस पर क्लिक करने से डिवाइस पर मैलवेयर इंस्टॉल हो जाता हो या व्यक्तिगत जानकारी, क्रेडेंशियल या वित्तीय विवरण प्रदान करने के लिए कहा जाता हो ।

संगठन या संस्था उपयोगकर्ताओं को इसके खतरों के बारे में जागरूक करके और उन्हें संदिग्ध सोशल इंजीनियरिंग संदेशों की पहचान करने और उनसे बचने के लिए प्रशिक्षित करके सोशल इंजीनियरिंग से होने वाले खतरों को कम कर सकते हैं। इसके अलावा तकनीकी प्रणालियों का उपयोग करके सोशल इंजीनियरिंग को ब्लॉक किया जा सकता है।

एंडपॉइंट्स पर मैलवेयर

अनेक संस्थान के यूजर कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट और मोबाइल फोन सहित विभिन्न प्रकार के एंडपॉइंट उपकरणों के साथ काम करते है, जिनमें से कई निजी स्वामित्व में हैं और संगठन के नियंत्रण में नहीं हैं और ये सभी नियमित रूप से इंटरनेट से जुड़े होते हैं। इन सभी एंडपॉइंट पर मैलवेयर एक प्राथमिक खतरा है, जिसे विभिन्न माध्यमों से प्रसारित किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप एंडपॉइंट से समझौता हो सकता है। पारंपरिक एंटीवायरस सॉफ्टवेयर मैलवेयर के सभी आधुनिक रूपों को रोकने के लिए अपर्याप्त हैं । एंडपॉइंट को सुरक्षित करने के लिए अधिक उन्नत दृष्टिकोण विकसित किए जा रहे हैं ।

एन्क्रिप्शन का अभाव

एन्क्रिप्शन प्रक्रियाएं डेटा को एन्कोड करती हैं ताकि इसे केवल गुप्त कुंजी वाले उपयोगकर्ता ही डिकोड कर सकें। उपकरण हानि या चोरी के मामले में डेटा हानि को रोकने में यह बहुत प्रभावी है। दुर्भाग्य से, इसकी जटिलता के कारण इस उपाय को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। स्टोरेज डिवाइस खरीदकर या एन्क्रिप्शन का समर्थन करने वाली क्लाउड सेवाओं का उपयोग करके संगठन तेजी से एन्क्रिप्शन को अपना रहे हैं ।

सूचना सुरक्षा और जोखिम प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण पहलू सूचना के मूल्य को पहचानना और सूचना के लिए उचित प्रक्रियाओं और सुरक्षा आवश्यकताओं को परिभाषित करना है। सभी सूचनाएं समान नहीं होती है और इसलिए सभी सूचनाओं को समान स्तर की सुरक्षा की आवश्यकता नहीं होती है । जागरूकता प्रशिक्षण कर्मचारियों को उचित सुरक्षा प्रथाओं और संगठनात्मक नीतियों के बारे में सूचित करने में मदद करता है। आदर्श रूप से, प्रशिक्षण एक नियमित गतिविधि होनी चाहिए जो संगठन की सुरक्षा संस्कृति में सहजता से समाहित हो । ❑

साइबर सुरक्षा

किसलय कुमार
सूचना प्रौद्योगिकी अधिकारी
अंचल कार्यालय, सिलीगुड़ी

मनुष्य के जीवन की मूलभूत आवश्यकता सिर्फ रोटी, कपड़ा और मकान है, यह कहना आज के परिवेश में तर्कसंगत नहीं लगता। 21वीं शताब्दी के इस युग में प्रौद्योगिकी को एक आवश्यकता या निर्भरता कहना ज्यादा उचित होगा। यह हमारे जीवन में सुबह से शाम तक ऐसे सम्मिलित है जैसे तन में साँसे। दिनचर्या की तमाम मौलिक जरूरतें आज इस पर निर्भर हैं। प्रौद्योगिकी पर बढ़ती निर्भरता का मतलब है कि हमारी, व्यक्तिगत, वित्तीय और राष्ट्रीय सुरक्षा लगातार खतरे में है। साइबर खतरों से बचाव के लिए इनसे संबंधित सुरक्षा के नियामकों को जानना एवं अपनाना अति आवश्यक है। पर्याप्त सुरक्षा के बगैर, हैकर्स आसानी से हमारी गोपनीय जानकारियों तक पहुँच सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पहचान की चोरी और वित्तीय हानि जैसे गंभीर परिणाम हो सकते हैं। साइबर सुरक्षा का मुख्य उद्देश्य साइबर हमलों के जोखिमों को कम करना, सिस्टम, नेटवर्क और प्रौद्योगिकियों के अनधिकृत शोषण से रक्षा करना है।

साइबर सुरक्षा हमलों के कुछ आम प्रकार- DOS हमले, DDOS हमले, मैन इन द मिडिल(MITM), फिशिंग, ह्वेल फिसिंग, स्पियर फिसिंग, रेनसमवेयर, पासवर्ड हमले, SQL इंजेक्शन, URL व्याख्या, वेब हमले, ट्रोजन हॉर्स, ड्राइव बाय हमले, XSS (cross site scripting), मैलवेयर आदि। यह सूची यही समाप्त नहीं होती है इनके अलावा भी हैकर्स प्रतिदिन आम लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए रोज नए प्रकार की चीटिंग के हथकंडो का इस्तेमाल कर रहे हैं। इनसे बचने के लिए हम सभी को सतर्क एवं सजग रहना आवश्यक है। जिसके लिए कुछ आम सावधानियां हैं, जिनके उपयोग से हम अपने साथ होने वाली साइबर दुर्घटनाओं को टाल सकते हैं।

नेटवर्क सुरक्षा

- एंटी वायरस सॉफ्टवेयर इनस्टाल करके और नियमित रूप से अपडेट करके वायरस को अपने कंप्यूटर में घुसने से रोकें। हमेशा सुनिश्चित करें कि आपका एंटीवायरस और एंटीमालवेयर अद्यतित है।
- नेटवर्क निगरानी एवं संबंधित उपकरणों को सुरक्षित करें। सर्वर, राउटर, स्विच और अन्य नेटवर्क के बुनियादी ढांचों को सुरक्षित रखें।
- फायरवाल को हमेशा अपडेट रखें।

सूचना सुरक्षा

- पासवर्ड का सही चुनाव एवं उसकी गोपनियता बनाए रखें। सुनिश्चित करें कि आप अपने पासवर्ड में बड़े और छोटे अक्षरों, संख्याओं और प्रतीकों के संयोजन का इस्तेमाल करें।

- फिशिंग से सावधान रहें, इलेक्ट्रानिक जालसाजी एक ऐसा कार्य है जिसमे किसी विश्वसनीय इकाई का मुखौटा धारण कर प्रयोक्ता नाम,पासवर्ड, क्रेडिट कार्ड विवरण जैसी जानकारियाँ हासिल करने का प्रयास किया जाता है। यह धोखाधड़ी इतनी वास्तविक लगती है कि ज़्यादातर लोग आसानी से इसका शिकार हो जाते है। उदाहरण के तौर पर आपकी निजी जानकारी साझा करके आपको धोखा दिया जा सकता है। आपको आने वाली कॉल बैंक, वकील या किसी प्रतिष्ठित व्यावसायिक संगठन से आयी प्रतीत हो सकती है, इनके साथ निजी जानकारियों को साझा करने से बचें। ओटीपी साझा करना एक आम गलती है, जिसके लिए सजग रहना जरूरी है। आमतौर पर फिशिंग ईमेल-स्पूफिंग या त्वरित संदेश द्वारा किया जाता है। ईमेल द्वारा या संदेश के द्वारा गलत लिंक पर क्लिक करके उपयोगकर्ता दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। प्राप्त लिंक के विश्वसनीयता की जांच आवश्यक है। लिंक द्वारा खुलने वाले वेबसाइट की विश्वसनीयता की जांच उसके नाम पर https:// है या नहीं यह देखकर की जा सकती है। खुद भी इन अविश्वसनीय चालबाज़ों से सतर्क रहें एवं घर के सभी सदस्यों को सजग करें।
- ई-बैंकिंग, एम-बैंकिंग का सावधानीपूर्वक उपयोग करें। मोबाइल पर उपलब्ध इस तरह के एप्स पर स्ट्रॉंग पासवर्ड लगाएँ।
- सोशल मीडिया पर अनावश्यक लिंक या गुप्त सूचनाओं को साझा करने से परहेज करें। सोशल साइट्स या मोबाइल संदेश पर लुभावने एवं आकर्षक ऑफर्स के झांसे में आने से बचें।
- एटीएम का प्रयोग करते वक्त किसी अनजान व्यक्ति की मदद लेने से बचें। पासवर्ड या पिन को कहीं भी लिखकर न रखें एवं उसे किसी के साथ साझा न करें। ऐसा कोई भी पिन न रखें जिसे कोई आसानी से समझ जाए जैसे आपका जन्मदिवस, विवाह वर्षगांठ या गाड़ी का नंबर आदि।

याद रखें, प्रत्येक वर्ष, 30 नवंबर को अंतर्राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा दिवस मनाया जाता है जिसका उद्देश्य साइबर हमलों के प्रति आम लोगों को सजग करना है उनमें बचाव के तमाम उपायों के प्रति जागरूकता फैलाना है। अगर गलती से कोई भी इन दुर्घटनाओं का शिकार हो जाता है तो घबराने के बजाए त्वरित कार्यवाही पर ध्यान देना चाहिए ताकि इन मामलों का पूर्ण निपटान हो सके एवं दोषी को सजा हो पाए। हमारे देश में साइबर क्राइम्स को अंजाम देनेवालों के लिए कठोर सजा का प्रावधान है। दुर्घटना होने पर 1930 पर कॉल कर साइबर सुरक्षा सेल की मदद ली जा सकती है या cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट दर्ज की जा सकती है। आज जरूरत है एकसाथ दृढ़संकल्प लेकर हम सुरक्षा उपायों को समझें एवं दूसरों को भी उनके प्रति सजग करें। जिस दिन साइबर सुरक्षा जन जागरण के रूप में प्रज्वलित हो जाएगी उस दिन देश में साइबर ठगों की दुकान हमेशा के लिए बंद हो जाएगी। ❑

विश्वभारतीः यात्रा वृतांत

यात्रा वृत्तांत

राजू रंजन
प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

शांतिनिकेतन के विषय में हम किताबों में यह पढ़ा करते थे कि यह भारत के पुराने गौरव का आधुनिक अवतार है। किशोर मन में धारणा थी कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर कलकत्ते के रहने वाले थे और वहीं पर शांतिनिकेतन भी है। किन्तु वास्तविकता यह है कि इनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने 1963 ई. में पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के बोलपुर नामक ग्राम में अपनी साधना हेतु एक आश्रम की स्थापना की जिसका नाम 'शांति-निकेतन' रखा गया। शांति निकेतन अर्थात शांति का निवास स्थान। यह कोलकाता से 160 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जिस स्थान पर वे साधना किया करते थे वहां एक संगमरमर की शिला पर बंगला भाषा में अंकित है-'तिनि आमार प्राणेरा आराम, मनेर आनन्द, आत्मार शांति'। 1901 ई. में गुरुदेव ने इसी स्थान पर बालकों की शिक्षा हेतु एक प्रयोगात्मक विद्यालय स्थापित किया जो प्रारम्भ में 'ब्रह्म विद्यालय' बाद में 'शान्तिनिकेतन' तथा 1921 ई० में 'विश्व भारती' विश्वविद्यालय के नाम से विख्यात हुआ।

लगभग 06 महीने पहले ही मैंने प्रधान कार्यालय में अपना पदभार ग्रहण किया। मौका था नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता के तत्वावधान में विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन का शैक्षिक भ्रमण। यूको बैंक, प्रधान कार्यालय जो नराकास (बैंक), कोलकाता का संयोजक कार्यालय है, ने उक्त शैक्षिक भ्रमण का एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया। इस कार्यक्रम के तहत सभी 28 सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों का यह बहुप्रतीक्षित शैक्षिक भ्रमण दिनांक 15 व 16 फरवरी 2024 को पूरा किया जाना था। मेरे लिए इस प्रकार का यह पहला अनुभव था।

तय कार्यक्रम के अनुसार 15 फरवरी 2024 को हमें शांतिनिकेतन, बोलपुर के लिए प्रस्थान करना था। सुबह आँखें खुलने के साथ शांतिनिकेतन को लेकर ख्याल आने लगे। शायद ऐसा..... शायद वैसा..... । खैर, पूर्वाह्न 10 बजे हम सभी प्रतिभागी पूर्वनिर्धारित स्थान जो रवीन्द्र सदन मेट्रो स्टेशन के पास था, पहुंचे। कुछ देर की प्रतीक्षा के बाद सभी प्रतिभागी एकत्र हो गए और बस में सवार हुए। हालांकि कोलकाता से शांतिनिकेतन जाने के लिए ट्रेन यात्रा भी काफी सुविधाजनक है। हावड़ा, कोलकाता और सियालदाह स्टेशन से कुल 25 ट्रेनें हैं जो शांतिनिकेतन जाती हैं परंतु बस का यह सफर अनूठा होने वाला था। कुछ ही समय पश्चात बस रवाना हो गयी। प्रकृति और कोलकाता की सुंदर झलकियों को देखते हुए हम सब आगे बढ़ते रहे। सांस्कृतिक मधुर भजनों, गजलों को सुनते हुए और एक-दूसरे से अपने विचार साझा करते हुए हम दोपहर एक बजे एक ढाबे पर खाने के लिए रुके। लगभग शाम के 04:30 बजे हमारी बस रुकी तो हम शांतिनिकेतन की अतिथिशाला के प्रांगण में थे।

वहाँ का वातावरण देखकर मुझे लगा कि भ्रमण यादगार रहने वाला है। गेस्ट हाउस में जल्द ही हमें कमरे आवंटित कर दिये गए। कुछ ही समय बाद हमें हिन्दी भवन की ओर भावी कार्यक्रम के लिए निकलना था। 05:15 बजे हम 'हिन्दी-

भवन' के लिए निकले और 05:30 बजे से संध्या का कार्यक्रम शुरू हो गया। वहाँ के मेधावी छात्रों ने उस कार्यक्रम की रूपरेखा, अतिथि सत्कार, सज्जा और शालीनतापूर्वक कार्यवाहियों का बहुत उत्कृष्ट संयोजन किया। हमने देखा कि शांतिनिकेतन के विद्यार्थी, आचार्य, अतिथिजन हो कोई भी अपने मन में आने वाले उत्साहभाव को व्यक्त करने के लिए हमारी तरह तालियाँ बजाने के स्थान पर 'साधु-साधु' कहते हैं। हम भी अपने मनोभावों को उस कार्यक्रम के पश्चात 'साधु-साधु' कहकर साधुवाद संबोधित करने लगे। कार्यक्रम में दो कलाप्रेमी भी आमंत्रित किये गए थे जिन्होंने कविताओं को गायन के माध्यम से उस शाम को और भी मनमोहक बना दिया। कार्यक्रम के प्रस्तुतीकरण के दौरान आगंतुकजनों को हिन्दी पत्रिका 'विश्वभारती' दी गयी। नराकास सदस्य सचिव और विश्वभारती के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ सुभाष चन्द्र राय के ज्ञानवर्धक कथनों के साथ लगभग 07:00 बजे इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

भारत के विश्वविद्यालयों में यदि विश्वभारती अनूठी है तो विश्वभारती में हिन्दी-भवन अनूठा है। यह ऐतिहासिक महत्व का भवन है। यह भवन गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के हिन्दी प्रेम, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की हिन्दी-निष्ठा, पं. बनारसीदास चतुर्वेदी के अथक-श्रम तथा हलवासिया ट्रस्ट की उदार अर्थ-सहायता का स्मारक है। मुझे यह जानकर रोमांच हो आया कि जिस केन्द्रीय कक्ष में हमारा कार्यक्रम हुआ उसी कक्ष में बैठकर कभी हजारीप्रसादजी ने 'कबीर' नामक पुस्तक लिखी तथा कई ललित निबंध रचे। इस भवन की आधारशिला रवीन्द्रनाथ ठाकुर की उपस्थिति में रखी गई तथा इसका उद्घाटन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी-भवन के प्रथम निदेशक थे। इस भवन का केन्द्रीय कक्ष सुंदर भित्तिचित्र से अलंकृत है। इन चित्रों में हिन्दी के आदिकालीन कवियों-संतों को दर्शाया गया है।

अब हम पुन: अपने गेस्ट हाउस के तरफ रवाना हुए। लौटते समय गुलाबी जाड़े की ठंडी हवाओं और एक अविस्मरणीय कार्यक्रम की यादें साथ लिए हम अपने-अपने कमरों में चले गए। चूकि रात के खाने में अभी 02 घंटे बाकी थे। समय के सदुपयोग के लिए हम शांतिनिकेतन के रास्ते पर छोटी-बड़ी दुकानों की ओर निकल गए। बाज़ार में कुछ ऐसी दुकानें थीं जिनमें विभिन्न कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया था। गुरुदेव की मूर्तियाँ, हाथ से निर्मित बहुत सारे सजावट के सामान, बच्चों के लिए खिलौने आदि। सड़क के किनारे लगे ठेलों से फास्टफूड की खुशबू भोजनप्रेमियों को अपनी ओर खींच रही थी। कुछ लोगों ने अपनी पसंद की कुछ चीजें खरीदी तो कुछ ने अपने जरूरत की। घूम-फिर कर हम वापस गेस्ट हाउस पहुंचे। चाँदनी रात थी। विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार से हम गेस्ट हाउस की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़े। मुख्य द्वार से गेस्ट हाउस की दूरी भी लगभग आधे किलोमीटर होगी। रास्ते के दोनों ओर छोटे-बड़े वृक्ष, खुशबूदार फूलों की क्यारियाँ हमें और रोमांचित कर रही थीं। रात्रि 09 बजे भोजन के बाद चाँदनी रात में थोड़ी चहलकदमी करके अपने कमरों में लौटे।

अगले दिन यानि 16 फरवरी को प्रात: लगभग 06 बजे हमारा सवेरा हुआ। वातावरण एकदम शांत। खिड़की से हल्की हवा आ रही थी। पक्षियों की मधुर आवाज सुनकर मुझे अपने गाँव की भोर की याद आ गई जहां हमारा सवेरा पक्षियों के चहचहाने के साथ होता था। बहरहाल, इन सभी अनुभवों के बाद आगे के कार्यक्रम की तैयारी करनी थी। हमने नाश्ते के तत्काल बाद विश्वभारती में स्थित संग्रहालय की ओर रुख किया। राह में हमने गुरुकुल के छात्रों को अध्ययनरत देखा। पेड़ों के नीचे खुली हवा में कक्षाएं लगीं थीं। हमने चारों ओर विशालकाय वृक्षों को देखा, उपासना घर, रवीद्र भवन, टैगौर आश्रम और तरह-तरह के सुंदर फूलों से सजी क्यारियों को देखा।

शांतिनिकेतन का उपासना घर जो 'प्रार्थना कक्ष' के नाम से भी जाना जाता है पूरे शांतिनिकेतन में सबसे आश्चर्यजनक और सुंदर इमारतों में से एक था। बेल्जियन कांच से बने इस हॉल को 'कांच मंदिर' भी कहा जाता है। प्रत्येक शाम इस हॉल को मोमबत्तियों से सजाया जाता है, जो इसकी सुंदरता को और अधिक निखारती है। टैगोर हाउस शांतिनिकेतन का एक खास स्थल है जहां रवीन्द्रनाथ अपना ज्यादा समय व्यतीत किया करते थे। एक बड़े क्षेत्र में होने से ये भवन बहुत ही आकर्षक लग रहे थे। कला और इतिहास के प्रति मेरी रुचि होने के कारण है ये सारी जगहें मुझे बहुत पसंद आई ।

वहाँ हमें एक बहुत रोचक स्थान भी देखने को मिला जहां गर्मियों के दिनों में रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपना समय गुजारते थे। यह जगह मिट्टी तथा अलकतरे से निर्मित थी जो आज भी खुद में अपनी मनमोहकता को समेटे आने वाले असंख्य दर्शनार्थियों को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। इस घर को 'श्यामली' के नाम से जाना जाता है। संग्रहालय के भ्रमण के दौरान रवीन्द्रनाथ टैगोर से जुड़ी कला-रचनाओं का वृहद संग्रह को देखने का मौका मिला। साहित्यिक रचनाएँ, कविताएँ, बंगला संस्कृति से संबंधित विधाएँ आदि। इस संग्रहालय में सालों के अमूल्य सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर को संभालकर रखा गया है। शांतिनिकेतन में रवीन्द्रनाथ के आवास परिसर में स्थित ऐतिहासिक कुआँ भी दर्शनीय था। साथ ही संग्रहालय में रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा उपयोग की गई कार भी हमने देखी जो उनके जीवन की संपन्नता और गौरव को दर्शाती है।

अब हमें 11:30 बजे से होने वाले संगोष्ठी कार्यक्रम में एकत्र होना था जिसका विषय था विश्वभारती: हिन्दी: हजारीप्रसाद द्विवेदी। संगोष्ठी विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय में हो रही थी। शांतिनिकेतन के वेदगान और दीप प्रज्ज्वलन के साथ संगोष्ठी शुरू हुई। मंच पर विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष तथा अन्य अतिथि विराजमान थे। हिन्दी विभागाध्यक्ष द्वारा स्वागत भाषण के पश्चात राजभाषा पत्रिका 'स्मारिका' का विमोचन हुआ। मुख्य वक्ता प्रो. रामेश्वर प्रसाद मिश्र, पूर्व आचार्य (हिन्दी भवन) ने हमें विश्वभारती के गौरव, स्थापना और विशेषताओं से अवगत कराया। वहाँ नराकास (बैंक), कोलकाता की ओर से छात्रों तथा अतिथियों को उपहार प्रदान किए गए। अंत में कार्यक्रम का समापन आश्रम संगीत 'आमादेर शांतिनिकेतन' के साथ किया गया।

संगोष्ठी लगभग 02:00 बजे सम्पन्न हुई। हम पुन: अतिथिशाला पहुंचे और मध्याह्न भोजन कर वापसी की तैयारी में लग गए। लगभग 03:20 बजे हमने शांतिनिकेतन के परिसर से विदाई ली और बस से वापस कोलकाता के लिए रवाना हुए। बस के खुलते ही मैं एक विरह-भाव में डूब गया। सुबह से मध्याह्न तक की दिनचर्या इतनी व्यस्त थी कि दिन गुजरने का आभास तक नही हुआ। या यूँ कहें कि सबकुछ इतना मनोहर था कि ये दो दिन गगन की ऊँचाइयों में उड़ते पतंग से भी तेज गति से निकल गए।

शांतिनिकेतन के परिसर को पार करने के बाद एक बार फिर हमसब बातचीत में लीन हो गए। कितने भाव थे हमारे मन में, कितनी उत्कंठा थी उन एहसासों को एक-दूसरे से साझा करने की। हमने परिसर में खूब फोटोग्राफी की। अब एक- दूसरे से उन तस्वीरों का भी लेनदेन शुरू हुआ। अंधेरा होने से पहले जी.टी रोड पर चाय के लिए रुके। बस फिर चली । साथियों को देखा वे बातचीत में लगे थे। मैं शांतिनिकेतन के शैक्षिक भ्रमण की यादों में खो गया। कोलकाता नगरी में कब आ पहुँचे पता ही नही चला। इस तरह एक अविस्मरणीय शैक्षिक भ्रमण सम्पन्न हुआ। इस भ्रमण की स्मृतियाँ मन में संचित हो गई है। ये स्मृतियाँ साहित्य, कला, दार्शनिकता और संस्कृति की एक प्रेरणा बनी रहेंगी। ❑

पुस्तक समीक्षा

शांतिनिकेतन का हिंदी-भवन

'आज मेरी सुदीर्घकालीन आकांक्षा पूर्ण हो रही है यह जानकर मैं अत्यंत आनंदित हूँ। मैं हिन्दी भाषा की उन्नति के लिए सर्वदा ही चेष्टा करता रहा, क्योंकि इस भाषा के द्वारा युग-युगांतर से अनगणित जन-गण अपने मन के भावों को प्रकट करते आ रहे हैं।' ये शब्द पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के प्रयत्नों तथा कोलकाता के श्रीमंतों के आर्थिक सहयोग से विश्वभारती में हिन्दी-भवन की आधारशिला रखे जाने के अवसर पर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहे थे। इस ऐतिहासिक अवसर पर उपस्थित दीनबंधु एंड्रयूज़ ने हिन्दी-भवन के भावी क्रियाकलाप के विषय में बताया था। उनके अनुसार हिन्दी-भवन हिन्दी भाषा-साहित्य के इतिहास की गवेषणा करेगा, एक पत्रिका का प्रकाशन करेगा जिसमें ये गवेषणाएं प्रकाशित की जाएंगी। इसके साथ-साथ राजपूताना से लेकर बिहार तक के विशाल क्षेत्र में इस कार्य में लगे विद्वानों से निकट संपर्क किया जाएगा तथा ऐसे ग्रंथ प्रकाशित किए जाएंगे जिनसे प्राचीन भारत की अध्यात्मिक संपत्ति की व्याख्या आधुनिक भाषा में हिन्दी भाषा-भाषी जनता के बीच रखी जाएगी। दीनबंधु एंड्रयूज़ ने आगे कहा हिन्दी भवन के माध्यम से हिन्दी तथा उर्दू भाषाओं के समान तत्वों पर बल देते हुए दोनों भाषाओं को निकट लाने का प्रयास किया जाएगा तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कृतियों का हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं उनकी कृतियों पर व्याख्यात्मक साहित्य तैयार कराया जाएगा।

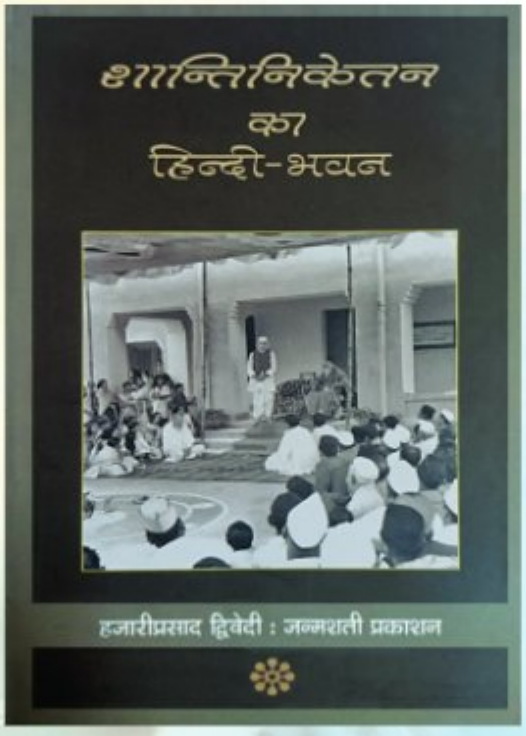

हिंदी-भवन विश्वभारती के आदर्श 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' के अनुरूप किया गया एक उद्योग है। रवींद्रनाथ चाहते थे कि विश्वभारती एक ऐसा स्थान हो जहां धर्म, भाषा, और जातिगत समस्त प्रकार की विभिन्नता होने पर भी हम मनुष्य को वाह्य भेद मुक्त रूप में, पूर्ण मनुष्य के रूप में देख सकें। विश्वभारती का चीना-भवन यदि उसकी अंतरराष्ट्रीय उन्मुखता को दर्शाता है तो उसका हिंदी-भवन उसके भारतीय भाषा समादर का स्मारक है। इस भवन का निर्माण राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के मंदिर की स्थापना की तरह का एक पुण्य-प्रयास था। इससे हिन्दी संबंधी अध्ययन तथा शोध के परिणामों से विश्वभारती में अध्ययनरत देशी-विदेशी छात्रों, शोधार्थियों तथा अध्यापकों को अवगत होने का सुअवसर मिला।

समीक्षाधीन पुस्तक 'शांतिनिकेतन का हिंदी-भवन' विश्वभारती में हिन्दी-भवन कल्पना, उसके रूपायन तथा संचालन के संबंध में एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। इसका प्रकाशन हिन्दी-भवन के आद्य निदेशक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के जन्मशती प्रकाशन के रूप में किया गया। इसके संपादक रामेश्वर मिश्र हैं। यह पुस्तक हलवासिया शोधग्रन्थमाला के अंतर्गत विश्वभारती ग्रंथन विभाग द्वारा प्रकाशित की गई है। हिन्दी-भवन का

शिलान्यास 16 जनवरी, 1938 को गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की उपस्थिति में हुआ। भवन का उद्घाटन 31 जनवरी 1939 को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। इस अवसर पर गुरुदेव ने स्वागत भाषण दिया।

'शांतिनिकेतन का हिंदी-भवन' 24 अध्यायों तथा चार परिशिष्टों से संकलित पुस्तक है। पुस्तक का प्राक्कथन विश्वभारती की परिकल्पना, उसके रूपायन तथा उन्नयन के सोपानों का एक हृदयग्राही तथा प्रेरक इतिवृत्त है। संपादक ने स्पष्ट किया है कि प्रस्तुत संकलन ग्रंथ का उद्देश्य हिन्दी-भवन का क्रमबद्ध इतिहास प्रस्तुत करना नहीं है वरन हिन्दी-भवन के संबंध में उपलब्ध समस्त सामग्री एकत्र प्रस्तुत करना है, जिससे विश्वभारती और उसके हिन्दी-भवन की स्थापना के पीछे निहित मूल भावना को यथोचित रूप से उद्घाटित किया जा सके।' इस संकलन ग्रंथ में विभिन्न स्रोतों से एकत्र की गई सामग्री को देखने से संपादकीय कौशल तथा दृष्टि का परिचय मिलता है। यह पुस्तक हिन्दी के प्रति हिन्दीतर भाषा-भाषी प्रदेश के सौजन्य तथा ग्रहणशीलता का परिचय देती है।

संकलन का पाँचवा अध्याय 'मेरे सपने कैसे साकार हुए' पं. बनारसीदास चतुर्वेदी का लिखा है। यह अध्याय सस्ता साहित्य मण्डल से प्रकाशित 'प्रेरक साधक' नामक पुस्तक से लिया गया है। इस अध्याय से पता चलता है कि हिन्दी-भवन का स्वप्न पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने देखा था और इस संबंध में उन्होंने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी से चर्चा की थी। संकलन के सातवें अध्याय (जिसे मृत्युंजय रवींद्र से लिया गया है) में हजारीप्रसादजी ने लिखा है कि सर्वप्रथम चतुर्वेदीजी के मन में यह बात आई कि यहाँ एक हिन्दी भवन की स्थापना होनी चाहिए। इस अध्याय में हजारीप्रसादजी लिखते हैं कि हिन्दी भवन के शिलान्यास की तिथि तय हो जाने के बाद भी यह तय नहीं हो पाया कि इसके ताम्रपत्र पर क्या लिखा जाए। गुरुदेव ने कहा कि हिन्दी और बंगला की संस्कृति के आदान-प्रदान से हिन्दी की उन्नति करना ही इसका उद्देश्य है। इस संबंध में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त से काव्यात्मक भाव अभिव्यक्त करने को कहा गया। उनसे कोई सहायता न मिलने पर अंत में हजारीप्रसादजी ने लेखनी उठाई तथा निम्न पंक्तियों से एक ताम्रपत्र तैयार कराया गया:

संवत वेद-ग्रहांक विधु, पूनो पौष सुमास।
गुरुवार-श्री एंड्रयूज़ ने, किया शिलान्यास।।
हिन्दी की संस्कृति तथा जो अनुपम रसवस्तु।
उसके उन्नयनार्थ यह, निहित शिला शुभमस्तु ।।

सबकी प्रसन्नता की बात थी कि इन पक्तियों को सुनकर गुरुदेव ने कहा, 'बेस होए छे , भालो होए छे।' इस अवसर पर एंड्रयूज़ जो एक अंग्रेज थे, हिन्दी में भाषण देना चाहते थे। उनके हिन्दी अज्ञान से सुपरिचित गुरुदेव यह जानकर आशंकित हुए। पर हजारीप्रसादजी ने समस्या का हल निकाला। हिन्दी भाषा में भाषण को रोमन लिपि में लिखा गया और उसे ही दीनबंधु एंड्रयूज़ ने पढ़ा। इसी अध्याय में हिन्दी-भवन की पत्रिका के स्वप्न के साकार होने की बात लिखी है तथा प्रिंटर्स डेविल के मनोरंजक उदाहरण दिए गए है। यथा आचार्य की जगह अनार्य, शांतिनिकेतन की जगह शास्तिनिकेतन आदि। इस अध्याय में द्विवेदीजी लिखते हैं कि हिन्दी-भवन परिसर में गुरुदेव द्वारा जो पौधा लगाया गया वह उनके जीवन का आखिरी पौधा-रोपण था। इसी अध्याय से हमें पता चलता है कि 'कबीर,' 'नाथ-संप्रदाय' आदि की रचना इसी भवन में हुई।

विश्वभारती पत्रिका के जनवरी 1972 अंक में प्रकाशित हजारीप्रसाद जी का एक निबंध 'गुरुवर श्री एंड्रयूज़ और हिन्दी भवन' शीर्षक से इस संकलन में शामिल है। विश्वभारती के उपाचार्य अथवा वाइस प्रेसीडेंट के रूप में कार्यरत सी एफ एंड्रयूज़ के धवल व्यक्तित्व, निरभिमान तथा निस्पृह प्रकृति की चर्चा सश्रद्ध की है। उन्होंने कहा है कि वे मनुष्य को कभी महत्वहीन नहीं समझते थे, सबमें भगवान की दिव्य मूर्ति देखा

करते थे और अपने को उसकी महती प्रेरणा का साधन यंत्र मात्र मानते थे। उन्होंने कभी किसी को निराश नहीं किया और फिर भी किसी की अनुचित आशा पूरी नहीं की। इसी क्रम में हम रामेश्वर मिश्र के लेख 'बनारसीदास चतुर्वेदी और हिन्दी-भवन' शीर्षक निबंध को देख सकते हैं। चतुर्वेदीजी विशाल भारत के संपादक होकर कलकत्ता आए थे। वर्ष 1928 से 1936 तक वे संपादक रहे। इस बीच वे कई बार शांतिनिकेतन आए तथा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का सान्निध्य पा सके। शांतिनिकेतन की यात्रा को वे तीर्थयात्रा कहा करते थे। उन्होंने कलकत्ते तथा बाहर से आए अनेक साहित्यकारों-समाजसेवियों को यह तीर्थयात्रा कराई थी। इस तीर्थयात्रा की चर्चा कई लाभार्थियों ने की है। इस यात्रा का सदुपयोग चतुर्वेदीजी ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य की समृद्धि के उदेश्य से किया। शांतिनिकेतन में हिन्दी-भवन के निर्माण का स्वप्न उन्होंने इसी उद्देश्य से देखा तथा इसके लिए अनेक विघ्न-बाधाओं को काट-काट कर उन्होंने तीन वर्षों में 14-15 बार शांतिनिकेतन की यात्रा की।

भित्तिचित्र में भक्त तुलसीदास

विश्वभारती का हिन्दी-भवन हिन्दी भाषा साहित्य के क्षेत्र में बनाई गई एक महत्वाकांक्षी योजना का अंग था। इस योजना के रूपायन में डॉ धीरेन्द्र वर्मा, पं. ललिताप्रसाद सुकुल सदृश समर्पित हिन्दी सेवियों ने कोलकाता (तब कलकत्ता) में किया था। प्रस्तुत संग्रह में डॉ रामसिंह तोमर का एक आलेख छपा है- हजारीप्रसाद द्विवेदी और हिन्दी-भवन। इस आलेख में डॉ तोमर लिखते हैं, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के मूल स्रोतों तथा आदिकालीन तथा मध्ययुगीन काव्यों का एक उच्च अध्ययन केंद्र बनाने की योजना से सभी विद्वान सहमत थे। इसी योजना के अंतर्गत महायान, अपभ्रंश भाषा और साहित्य, नाथ पंथ, सूफ़ीमत इत्यादि विषयों पर अच्छा कार्य हुआ। यह आलेख विश्वभारती, खंड 20, अंक 1-2 में अप्रैल 1979 में प्रकाशित हुआ। हिन्दी-भवन के निर्माण में कलकत्ते के हलवासिया ट्रस्ट का मुख्य योगदान रहा। ट्रस्ट तथा उसकी उदार सहायता के संबंध एक अन्य आलेख 'हलवासिया ट्रस्ट: आर्थिक पृष्ठपोषक' में रामसिह तोमर लिखते हैं कि कलकत्ते में प्रमुख व्यवसायी विश्वेश्वरलाल हलवासिया भिवानी, जिला हिसार ने एक ट्रस्ट बनाया था। उसके ट्रस्टी भागीरथ कानोरिया तथा पुरुषोत्तमलाल हलवासिया ने हिन्दी भवन के निर्माण, भवन के पुस्तकालय के संवर्धन तथा ग्रंथमाला के प्रकाशन में यथोचित सहयोग दिया।

हिन्दी-विभाग की परिकल्पना तथा उसके रूपायन के संबंध में कोई चर्चा हिन्दी भवन के भित्तिचित्रों की चर्चा के बिना पूरी नहीं होगी। ये भित्तिचित्र अजंता की गुफाओं के भित्तिचित्रों की याद दिलाते हैं। ये चित्र हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास से संबंधित घटनाओं तथा मध्यकालीन संतों के जीवन-प्रसंगों से संबंधित हैं। इन भित्तिचित्रों के निर्माण की प्रक्रिया के संबंध में जया अप्पासामी का आलेख हलवासिया स्मृति ग्रंथ से साभार प्रकाशित किया गया है। लेखिका बताती हैं कि इन चित्रों का अंकन विनोदविहारी मुखोपाध्याय के नेतृत्व में किया गया। मुखोपाध्याय विश्वभारती के प्रख्यात चित्रकार नंदलाल बोस के शिष्य थे। यह चित्रकारी हिन्दी-भवन के केन्द्रीय कक्ष के तीन तरफ छत तथा दीवारों पर की गई है। इसका फ्रेम गेरुए रंग की पतली किनारी से बना है। इन चित्रों से हिन्दी-भवन सौन्दर्य मंडित तो हुआ ही है, विभाग में हिन्दी के पठन-पाठन के लिए एक अभिनव परिवेश भी सर्जित हुआ है।

यदि शांतिनिकेतन का गौरव विश्वभारती है तो हिन्दी भवन का गौरव इसके विभिन्न क्रियाकलाप हैं। इन क्रियाकलापों में मूर्धन्य है इसकी पत्रिका 'विश्वभारती'। हिन्दी-भवन की स्थापना के अवसर पर गुरुदेव ने इच्छा प्रकट की थी कि एक ऐसी पत्रिका यहाँ से प्रकाशित हो जिसके द्वारा भारत की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक साधना का जो कुछ भी सर्वोत्तम है, उसका नियमित रूप से प्रचार और उन्नयन होता रहे। इसी उद्देश्य को लेकर वर्ष 1942 में 'विश्वभारती' पत्रिका का आरंभ हुआ। पत्रिका के संबंध में इस पुस्तक में दो आलेख हैं। मोहनलाल वाजपेयी 'विश्वभारती पत्रिका: आदिपर्व' में लिखते हैं, 'पत्रिका का एक संपादक-मंडल था किन्तु संपादकीय कर्तव्य पूर्णतया हजारीप्रसाद द्विवेदी के ही जिम्मे था, जिन्हें तमाम शांतिनिकेतन पण्डितजी कहा करता था। ... प्रकाशितव्य सामग्री के संबंध में एक नीतिगत नियम यह था कि कोई रचना पत्रिका में न छापी जाए जो स्वयं संपादक के निकट दुर्बोध्य हो अथवा अपनी भाषा या शैली के कारण साधारण सुसंस्कृत पाठक के लिए अस्पष्ट हो।' लेखक लिखते हैं कि पत्रिका के लेख विविधता से सम्पन्न होते थे। इसके लिए पण्डितजी स्वयं ही लेखकों से विषय सुझाते हुए रचनाएं मांगा करते थे। नवलेखकों से प्राप्त अनाहूत रचनाओं के प्रति पण्डितजी की उत्सुकता देखते ही बनती थी। यदि उन्हें लगता कि विषय महत्वपूर्ण है तथा लेखक के पास कहने को कुछ है तो वे उसे छपने योग्य बनाने के लिए सानंद श्रम करते थे। हिन्दीतर भाषा-भाषी लेखकों से लिखवाने में उनकी खास रुचि थी। लेख को ठीक करने के लिए वे बार-बार पुस्तकालय जाते, संदर्भ देखते। प्राय: ऐसा होता कि अंत तक वह लेख नवलेखक की अपेक्षा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का हो जाता। पर लेख छपता मूल लेखक के नाम से ही।

समीक्ष्य पुस्तक 'शांतिनिकेतन का हिन्दी भवन' में चार परिशिष्ट भी हैं। इनमें गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के हिन्दी प्रेम को लेकर दो आलेख हैं। 'गुरुदेव और हिन्दी' आलेख में जो मूलत: विशाल भारत के जनवरी, 1942 के अंक में छपा था बनारसीदास चतुर्वेदी लिखते हैं, 'गुरुदेव हिन्दी का प्रचार चाहते थे और खूब चाहते थे; पर उनका ढंग दूसरा ही था। उन्हें आचार्य क्षितिमोहन सेन की कार्यपद्धति पसंद थी, अर्थात हिन्दी में जो कुछ सर्वोत्तम है, उसे भारत के प्रांतीय भाषा-भाषियों के सम्मुख रखना।' वे आगे लिखते हैं, 'गुरुदेव ईंट-पत्थर-चूने में धन व्यय करने के विरोधी थे, और हिन्दी और हिन्दी-भवन के कार्यकर्ताओं से उन्होंने कहा भी कि भवन कच्चा ही बनाया जाए और जो रुपया बचे, उसे साहित्य-निर्माण पर व्यय किया जाए। गुरुदेव की इच्छा थी कि विवेकशील हिन्दी विद्वानों का एक समूह हिन्दी-भवन में काम करे।' गुरुदेव हिन्दी लेखकों से मिलने को सदा उत्सुक रहते थे। लेखक ने माखनलाल चतुर्वेदी तथा जैनेन्द्र से गुरुदेव के, मुलाकात के विषय में जानकारी दी है। लेखक लिखते हैं, 'श्रीयुत प्रेमचंदजी से मिलने के लिए विशेष रूप से उत्सुक थे और कई बार शांतिनिकेतन से प्रेमचंदजी को निमंत्रण भी दिया गया था; पर दुर्भाग्यवश प्रेमचंदजी कभी वहाँ पहुँच ही नहीं सके।' परिशिष्ट के दो अध्याय क्रमश: सी एफ एंड्रयूज़ (द हिन्दी भवन ऐट शांतिनिकेतन) तथा बलराज साहनी (द हिन्दी-भवन) के हैं।

'शांतिनिकेतन का हिन्दी-भवन' नामक यह पुस्तक हिन्दी भाषा-साहित्य के प्रचार-प्रसार तथा गवेषणा की दृष्टि से एक मूल्यवान संग्रह है। इसमें इतिहास है, संस्मरण हैं, अनुश्रुतियां हैं तथा एक सम्पूर्ण आकलन है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने हजारीप्रसाद द्विवेदी को विश्वभारती में प्रतिष्ठित कर के जो महनीय कार्य किया कुछ वैसा ही कार्य हजारीप्रसाद जी ने हिन्दी-भवन के निर्माण तथा उसके संचालन से जुड़कर किया। यह संग्रह हमें हिन्दी के प्रति तद् युगीन धारणा तथा आकांक्षा को समझने का अवसर देता है तथा हिन्दी के प्रति अपने को पुन: समर्पित करने की प्रेरणा भी। अत: हजारीप्रसाद द्विवेदी: जन्मशती प्रकाशन के रूप में इस संग्रह का यथोचित स्वागत होना स्वाभाविक ही है। ❑

राम अभिषेक तिवारी, प्रबंधक (राभा), प्रधान कार्यालय

अभिज्ञा तिवारी, सुपुत्री श्रीराम अभिषेक तिवारी, प्रबंधक (राजभाषा), राजभाषा विभाग, यूको बैक, प्रधान कार्यालय

उन्नति, सुपुत्री श्री सूरज कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), प्रधान कार्यालय

अन्वेषा रंजन, सुपुत्री सुश्री निधि कुमारी, रिटेल बैंकिंग विभाग, यूको बैक, प्रधान कार्यालय

कविताई

साथ में तुम चलो पास में तुम रहो

विवेकानन्द सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र, जयपुर

साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो,
साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो,
वक्त का यूँ गुजरना ठहर जाएगा ।
हम तुम्हारे रहें, तुम हमारे रहो,
दर्द भी इश्क बनकर उतर आएगा।
साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो,
वक्त का यूँ गुजरना ठहर जाएगा ।
साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो,

आज है ये अंधेरा बहुत ही घना,
रात है या कयामत की है बात कोई,
छू लो मुझको जरा अपने होठों से तुम,
मेरा दावा है सब कुछ बदल जाएगा।
साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो,
वक्त का यूँ गुजरना ठहर जाएगा ।
साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो,

तितलियाँ हैं बेकल कि जाएँ कहाँ,
भौंरें कहते है हम मर न जाएँ यहाँ,
बाग है सूना, सूना चमन भी यहाँ,
बाग है सूना, सूना चमन भी यहाँ,
तुम जो चाहो तो गुलशन ये बन जाएगा।
साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो,
वक्त का यूँ गुजरना ठहर जाएगा ।
साथ में तुम चलो, पास में तुम रहो।।

उम्मीदों का तारा देखा

तरुण कुमार सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, कानपुर

काली तम की रेखाओं में, मैंने फिर उजियारा देखा,
नभ से एक इशारा देखा, उम्मीदों का तारा देखा।

मेघ गगन पर आच्छादित था, और निशा छाई थी मन में,
प्रेम हृदय में संचित करने, भटक रहा था मै उपवन में।

तभी दूर पर्वत पर मैंने, जलता हुआ सितारा देखा,
नभ से एक इशारा देखा, उम्मीदों का तारा देखा।

झूठ बराबर छलक रहा था, सच का कोई छोर नही था,
काल-कोठरी में चंदा की, अंश बराबर भोर नही था।

सच का दीप लिए तब हाथों, मैंने हाथ तुम्हारा देखा,
नभ से एक इशारा देखा, उम्मीदों का तारा देखा।

आँच नही आ सकती सच पर, उम्र झूठ की क्षणभंगुर है,
घोर तमस की परिपाटी पर, बीज सत्य का ही अंकुर है।

इसी सत्य के लिए सदा ही, झूठ को मैंने हारा देखा,
नभ से एक इशारा देखा, उम्मीदों का तारा देखा।

अंधे एक थपेड़े से ही, दूर हुई थी नाव हमारी,
शून्य हुआ था जलथल जीवन, छाई आँखों में अँधियारी।

तभी जोहते बाट हमारी, मैंने पास किनारा देखा,
नभ से एक इशारा देखा, उम्मीदों का तारा देखा।

काली तम की रेखाओं में, मैंने फिर उजियारा देखा,
नभ से एक इशारा देखा, उम्मीदों का तारा देखा।

एक मुलाकात

मो० साविर यूको बैक के मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी के रूप में सेवारत हैं। आपको एक विदग्ध संकाय, आत्मविश्वास से भरे कार्यपालक, प्रेरक लीडर तथा सौम्य सहकर्मी के रूप में जाना जाता है।

वर्तमान परिदृश्य में सूचना सुरक्षा के प्रति कार्मिकों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से यूको अनुगूँज के इस अंक में प्रस्तुत है उनसे बातचीत के संपादित अंश।

सूचना सुरक्षा (इन्फोसेक) क्या है ?

सूचना सुरक्षा का तात्पर्य संवेदनशील जानकारी को अनधिकृत गतिविधियों से बचाना है। इसका लक्ष्य ग्राहक खाता विवरण, वित्तीय डेटा या बौद्धिक संपदा जैसे महत्वपूर्ण डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करना है।

सूचना सुरक्षा के मौलिक सिद्धांत क्या हैं ?

सूचना सुरक्षा के मूल सिद्धांत गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता हैं। इन्हें एक साथ CIA ट्रायड कहा जाता है।

गोपनीयता

गोपनीयता उपायों को सूचना के अनधिकृत प्रकटीकरण को रोकने के लिए डिजाइन किया गया है। इसका उद्देश्य सूचना को सुरक्षित और यह सुनिश्चित करना है कि यह केवल उन व्यक्तियों के लिए दृश्यमान और सुलभ हो जो इसके लिए अधिकृत हैं या जिन्हें संगठनात्मक कार्यों के लिए इसकी आवश्यकता है।

अखंडता

अखंडता डेटा में अनधिकृत परिवर्तनों (जोड़ना, हटाना, परिवर्तन आदि) के विरुद्ध सुरक्षा शामिल है। अखंडता का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि डेटा सटीक और विश्वसनीय है और इसमें गलती से या दुर्भावनापूर्ण तरीके से कोई बदलाव नहीं किया गया है।

उपलब्धता

उपलब्धता का उद्देश्य प्रौद्योगिकी अवसंरचना, अनुप्रयोगों और डेटा को तब उपलब्ध कराना है जब अधिकृत उपयोगकर्ता को संगठनात्मक प्रक्रिया में आवश्यक जानकारी और संसाधनों की आवश्यकता हो।

सूचना सुरक्षा और साइबर सुरक्षा में क्या अंतर है ?

सूचना सुरक्षा तथा साइबर सुरक्षा के दायरे और उद्देश्य दोनों भिन्न है। दोनों शब्दों का अक्सर एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन अधिक सटीक रूप से, साइबर सुरक्षा सूचना सुरक्षा की एक उपश्रेणी है। सूचना सुरक्षा एक व्यापक क्षेत्र है जो डेटा सुरक्षा (डिजिटल हो या भौतिक), एंडपॉइंट सुरक्षा, डेटा एनाक्रेप्सन, और एक्सेस कंट्रोल जैसे कई क्षेत्रों को कवर करता है। इसमें डेटा की गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता सुनिश्चित करना शामिल है।

साइबर सुरक्षा मुख्य रूप से प्रौद्योगिकी से संबंधित खतरों को प्रतिबंधित करती है, इसमें ऐसे अभ्यास और उपकरण शामिल हैं जो उन्हें रोक सकते हैं या कम कर सकते हैं। इसमे फायरवॉल, एंटीवायरस सॉफ्टवेयर, और नेटवर्क मॉनिटरिंग आदि के माध्यम से नेटवर्क, एप्लिकेशन और एंडपॉइंट्स की सुरक्षा शामिल है।

हमारे बैंक की सूचना सुरक्षा नीति पर प्रकाश डालें ।

सूचना सुरक्षा नीति (आईएसपी) नियमों का एक समूह है जो

आईटी परिसंपत्तियों का उपयोग करते समय कार्मिकों का मार्गदर्शन करता है। संगठन यह सुनिश्चित करने के लिए सूचना सुरक्षा नीतियाँ बनाती हैं कि कर्मचारी और अन्य उपयोगकर्ता सुरक्षा प्रोटोकॉल और प्रक्रियाओं का पालन करें। सूचना सुरक्षा नीति (Information Security Policy) का उद्देश्य किसी संगठन की सूचना संपत्तियों की सुरक्षा करते हुए यह सुनिश्चित करता है कि सूचना अनधिकृत पहुँच, उपयोग, प्रकटीकरण, विघटन, संशोधन से रक्षित है तथा केवल अधिकृत उपयोगकर्ता ही संवेदनशील सिस्टम और जानकारी तक पहुँच सकते हैं।

एक प्रभावी सुरक्षा नीति के तौर पर हमारी टीम अनुपालन सुनिश्चित करने तथा सूचना सुरक्षा के खतरों को रोकने और कम करने की दिशा में दैनंदिन सक्रिय रहती है। अपनी नीति को वास्तव में प्रभावी बनाने के लिए हमारी टीम संगठन में होने वाले बदलावों, नए खतरों, पूर्ववर्ती उल्लंघनों से निकाले गए निष्कर्षों और सुरक्षा प्रणालियों और उपकरणों में बदलावों के आधार पर इसे अक्सर अद्यतित रखती है।

अपनी सूचना सुरक्षा रणनीति को व्यावहारिक बनाने के साथ-साथ हमारी टीम संगठन के भीतर विभिन्न विभागों की जरूरतों और तात्कालिकता को पूरा करने के लिए विशिष्ट परिस्थितियों में नियमों से विचलित हुए बिना कार्यनिष्पादन हेतु कुशल प्रशिक्षण प्रदान करती है।

आजकल हम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर 'एंड टू एंड एनक्रिप्शन' शब्द देखते हैं, यह क्या है ?

एंड-टू-एंड एनक्रिप्शन एक सुरक्षा तकनीक है जो दो उपकरणों के बीच साझा किए जा रहे डेटा को गोपनीय (इनक्रिप्ट) करती है। इसका मतलब है कि संदेश भेजने वाले और प्राप्त करने वाले के अलावा कोई तीसरा व्यक्ति उस डेटा को नहीं पढ़ सकता।

इस प्रक्रिया में, जब एक संदेश भेजा जाता है, तो वह एक विशेष कोड (एनक्रिप्शन) के साथ लॉक हो जाता है। यह कोड केवल प्राप्तकर्ता के पास होता है, जिससे वह संदेश को डिक्रिप्ट कर सकता है और पढ़ सकता है। उपकरण के खो जाने या चोरी हो जाने की स्थिति में या हमलावरों द्वारा संगठनात्मक प्रणालियों से समझौता किए जाने की स्थिति में डेटा की हानि या भ्रष्टाचार को रोकने में यह बहुत प्रभावी है।

मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी के पद पर आप क्या चुनौतियां देख रहे हैं ?

जोखिम प्रबंधन, साइबर जागरूकता बढ़ाना, अनुपालन और विनियमों का पालन करते हुए सुरक्षा कार्यक्रम बनाना हमारी टीम के चुनौतीपूर्ण कार्यों में शामिल है। हमारी पूरी टीम चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए अपने कौशल और अनुभव का प्रभावी ढंग से उपयोग कर रणनीतियाँ बनाता है तथा उनका कार्यान्वयन करता है।

नवीनतम साइबर सुरक्षा समाचार, उपकरण और खतरों के बारे में अपडेट रहने के लिए आप कौन सी तकनीकें अपनाते हैं ?

साइबर सुरक्षा के बारे में अपने ज्ञान को अद्यतित रखने के लिए हमारी टीम नियमित रूप से कुछ उद्योग मानकों और प्रासंगिक समाचार स्रोतों की सहायता लेती है। जिससे हमें इस क्षेत्र के हालिया और ट्रेंडिंग अपडेट के बारे में जानने में मदद मिलती है। साथ ही, भारतीय रिजर्व बैंक, सीईआरटी-आईएन (CERT-In), एनसीआईआईपीसी (NCIIPC) आदि जो साइबर घटनाओं की जानकारी इकट्ठा कर, उनका विश्लेषण कर सुरक्षा के उपाय निर्देशित करता है। हमारी टीम सुरक्षा रणनीतियों, तथा नीतियों का पूर्णत: अनुपालन करती है। इसके अलावा, हमारी टीम वीडियो कॉन्फ्रेंस, सेमीनार, वेबिनार और कार्यशालाओं जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सूचना सुरक्षा विशेषज्ञों की मूल्यवान अंतर्दृष्टि से अपने ज्ञान का अद्यतन करती है तथा उनके द्वारा सुझाएं गए उपायों पर कार्रवाई करती है।

संगठन के साइबर सुरक्षा प्रयासों को मजबूत करने में हमें क्या ध्यान रखना चाहिए ?

कार्यस्थल में मजबूत साइबर सुरक्षा क्षमता के महत्व को समझते हुए सर्वप्रथम कार्मिकों के प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करते हुए कार्मिकों को साइबर सुरक्षा कौशल विकसित करने में मदद करनी चाहिए ताकि वे साइबर खतरों को रोकने और पहचानने में सक्षम हो सकें। मजबूत पासवर्ड नीतियाँ, बहु-कारक प्रमाणीकरण (MFA), नियमित सॉफ्टवेयर अपडेट, कर्मचारी प्रशिक्षण, डेटा एनक्रिप्शन, फायरवॉल और एंटीवायरस सॉफ्टवेयर, नियमित बैकअप, सुरक्षा नीतियों का पालन कुछ ऐसे पहलू हैं जिनकी नियमित समीक्षा करनी चाहिए जिससे इसके मजबूत और कमजोर बिंदुओं का आकलन किया जा सके। इससे प्रभावी रणनीति बनाने और संगठन के आईटी प्रणाली को मजबूत करने में मदद मिलती है।

कर्मचारी की भूमिका के लिए आकर्षक, प्रासंगिक और प्रभावी बनाए रखने के लिए हमारी टीम नियमित अपडेट, गेमिफिकेशन और वास्तविक दुनिया के परिदृश्य समाहित कर व्यावहारिक बनाने का प्रयास करती है।

हमारी साइबर सुरक्षा क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए आप हमें क्या सुझाव देंगे ?

मजबूत पासवर्ड, दो-कारक प्रमाणीकरण (2FA), अद्यतित सॉफ्टवेयर, डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण के माध्यम से साइबर सुरक्षा क्षमताओं को सशक्त किया जा सकता है। इसके साथ साथ सॉफ्टवेयर तथा ऑपरेटिंग सिस्टम का नियमित रूप से अद्यतन, एक औपचारिक साइबर सुरक्षा नीति फ्रेमवर्क जिसमें प्रशासन, जोखिम प्रबंधन, अनुपालन, डाटा बैक-अप, प्रवर्तन और उपयोग नीति तथा साइबर सुरक्षा की व्यापक और नियमित समीक्षा साइबर सुरक्षा

सूचना सुरक्षा विभाग, प्रधान कार्यालय की टीम
बाएं से दाएं श्री शांतनु कुमार बारिक, श्री समीर कुमार, सुश्री संगीता कुंडू, श्री पंकज जयसवाल, मो. साबिर (मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी), श्री अंकित कुमार, श्री श्रीनिवास एवं श्री अंकित राज

आप साइवर सुरक्षा प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों के प्रति कैसा दृष्टिकोण रखते हैं ?

साइबर सुरक्षा तथा सूचना सुरक्षा एक सामूहिक दायित्व है। संगठन में कार्यरत प्रत्येक कार्मिकों के साथ साथ कार्य में संलग्न वेंडरों तथा तृतीय पक्ष एजेंसी की यह जिम्मेदारी है कि वे सूचना सुरक्षा से संबंधित नियमों व दिशनिर्देशों का अनुपालन करें। इसके लिए सबसे आवश्यक पहलू प्रशिक्षण के प्रत्येक

क्षमताओं को सशक्त करती है।

आप ऐसी स्थिति से कैसे निपटेंगे जहां आवश्यक साइबर सुरक्षा उपायों का कार्यान्वयन उपयोगकर्ता अनुभव या परिचालन दक्षता के साथ टकराता हो ?

साइबर सुरक्षा उपायों का कार्यान्वयन कभी-कभी उपयोगकर्ता अनुभव (UX) और परिचालन दक्षता के साथ टकराव कर सकता है। उदाहरण के लिए, मजबूत पासवर्ड

नीतियाँ और दो-कारक प्रमाणीकरण (2FA) सुरक्षा को बढ़ाते हैं, लेकिन उपयोगकर्ताओं के लिए असुविधाजनक हो सकते हैं। इसी तरह, डेटा एनक्रिप्शन और नियमित सुरक्षा अपडेट सिस्टम की गति को प्रभावित कर सकते हैं।

इस टकराव को हल करने के लिए कुछ समाधान जैसे सुरक्षा और उपयोगकर्ता अनुभव के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण (जैसे फिंगरप्रिंट या फेस आईडी) का उपयोग करना, जो सुरक्षित भी है और उपयोग में आसान भी। इसके साथ साथ उपयोगकर्ताओं को साइबर सुरक्षा के महत्व और उपायों के बारे में शिक्षित करना। इससे वे सुरक्षा उपायों को बेहतर समझेंगे और उनका पालन करेंगे। उन्नत तकनीकों का उपयोग तथा नियमित समीक्षा और अपडेट सुरक्षा तो बढ़ाते हैं साथ ही साथ उपयोगकर्ता अनुभव को प्रभावित नहीं करते। इनका ध्यान रखकर आवश्यक साइबर सुरक्षा उपायों का कार्यान्वयन उपयोगकर्ता अनुभव या परिचालन दक्षता के साथ टकराव को दूर किया जा सकता है।

क्या हमारे कार्मिक अच्छी तरह प्रशिक्षित हैं और संभावित साइवर खतरों के प्रति जागरूक हैं?

जब अनुपालन की बात आती है तो प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों को बेहतर निर्णय लेने में सहायता करना हमेशा समाधान का हिस्सा होता है। परिदृश्य आधारित इंटरैक्टिव प्रशिक्षण सबसे अच्छा काम करता है। जब संभव हो, किसी ईवेंट प्रकार के लिए विशेष रूप से बनाए गए परिदृश्य के माध्यम से प्रशिक्षण से कर्मचारियों को उनकी भूमिका तथा सुरक्षा या व्यवसाय निरंतरता घटना के समाधान को समझाने में मदद मिलती है।

हमारी टीम प्रशिक्षण को विभिन्न कार्यक्षेत्रों में पदस्थापित कार्मिकों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं के लिए उपयुक्त बनाते हुए उनके कार्यों के अनुरूप प्रासंगिक बनाती है जिससे उपयोगकर्ता भूमिकाओं के लिए नियमित और अनुकूलित प्रशिक्षण वास्तव में साइबर हमले के जोखिम को पहचानने में सक्षम होते हैं।

वर्तमान में फ्लैश वॉलेट ऐप या किसी अन्य ई-वॉलेट ऐप के माध्यम से धोखाधड़ी की समस्या सामने आई है, इससे बचने हेतु क्या सुरक्षा सावधानियां बरतनी चाहिए?

साइबर ठगी से सुरक्षा हेतु सबसे गूढमंत्र है कि किसी भी अनजान या संदिग्ध लिंक पर क्लिक करने से बचें। यह फिशिंग अटैक का हिस्सा हो सकता है। अपने वॉलेट ऐप के लिए मजबूत और अद्वितीय पासवर्ड का उपयोग करें। अगर कोई व्यक्ति बैंक या ऐप की ओर से कॉल करने का दावा करता है और आपसे व्यक्तिगत जानकारी मांगता है, तो सावधान रहें और जानकारी साझा न करें। अपने ऐप और डिवाइस की सुरक्षा सेटिंग्स को हमेशा अपडेट रखें। अगर आपको किसी संदिग्ध गतिविधि का अनुभव हो, तो तुरंत अपने बैंक या संबंधित सेवा प्रदाता को सूचित करें।

संदेश के रूप में प्राप्त होने वाले APK/IPA एक्सटेंशन वाले फाइलों से क्या खतरें हैं, इसमे क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

एंड्रॉइड में एपीके (APK) फाइलें तथा आईओएस में (IPA) जब अनजान या अविश्वसनीय स्रोतों से डाउनलोड की जाती हैं तो साइबर अपराधी आपके डिवाइस के संवेदनशील डेटा जैसे यूपीआई और एटीएम पिन, बैंकिंग क्रेडेंशियल, ओटीपी आदि तक दूरस्थ पहुंच प्राप्त करने के लिए संदेशों या व्हाट्सएप के माध्यम से दुर्भावनापूर्ण ऐप्स प्रसारित कर सकते हैं। इसलिए कभी भी ".APK", "IPA" तथा कंप्युटरों में ".EXE" आदि जैसे दुर्भावनापूर्ण एक्सटेंशन वाली अप्रत्याशित फाइलें डाउनलोड न करें। यदि कुछ आवश्यक कारण हो तो इन्हें डाउनलोड करने से पहले सतर्क रहें और इंस्टॉलेशन से पहले ऐप की प्रामाणिकता सत्यापित करें, उसकी समीक्षा और रेटिंग्स देखें, और सुनिश्चित करें कि वह विश्वसनीय है तथा स्रोत आधिकारिक है। अपने डिवाइस पर एक अच्छा एंटीवायरस सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करें और नियमित रूप से स्कैन करें। अपने डिवाइस की सेटिंग्स में "Unknown Sources" को सक्षम न करें,

जब तक कि आप पूरी तरह से सुनिश्चित न हों कि फाइल सुरक्षित है।

फर्जी ईमेल कैसे पहचानें ?

फर्जी ईमेल अक्सर अजीब या असामान्य ईमेल पतों से आते हैं। उदाहरण के लिए, किसी कंपनी का ईमेल पता आमतौर पर उनके डोमेन नाम से मेल खाता है, जैसे कि @company.com। अगर ईमेल पता अजीब या असामान्य लगे, तो सतर्क रहें। साथ ही फर्जी ईमेल में अक्सर गलत वर्तनी और व्याकरण की गलतियाँ होती हैं। इसके अलावा, अगर ईमेल में अत्यधिक तात्कालिकता या डराने वाली भाषा का उपयोग किया गया है, तो यह फर्जी हो सकता है। इसमे अक्सर संदिग्ध लिंक और अटैचमेंट्स होते हैं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले उसे ध्यान से जांचें। सुरक्षित लिंक आमतौर पर https:// से शुरू होते हैं। कोई भी वैध कंपनी या संस्था ईमेल के माध्यम से आपकी व्यक्तिगत जानकारी नहीं मांगेगी। अगर ईमेल में आपसे व्यक्तिगत जानकारी मांगी जा रही है, तो यह फर्जी हो सकता है।

अगर आपको किसी संगठन से ईमेल प्राप्त होता है, तो सीधे उनकी आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर जानकारी की पुष्टि करें।

सार्वजनिक यूएसबी पोर्ट/चार्जिंग स्टेशनों के माध्यम से साईवर ठगी की घटनाएं बढ़ रही है इसके क्या कारण है और समाधान क्या है ?

सार्वजनिक यूएसबी पोर्ट/चार्जिंग स्टेशनों के माध्यम से साइबर ठगी की घटनाएं बढ़ने के पीछे मुख्य कारण जूस जैकिंग है। इसमें साइबर अपराधी सार्वजनिक यूएसबी चार्जिंग स्टेशनों पर मैलवेयर या मॉनिटरिंग सॉफ्टवेयर इंस्टॉल कर देते हैं, जिससे वे उपयोगकर्ताओं के डिवाइस से फोटो, संपर्क और वित्तीय जानकारी सहित व्यक्तिगत/ संवेदनशील जानकारी चुरा सकते हैं। इससे सुरक्षा हेतु सुरक्षित चार्जिंग सुनिश्चित करने के लिए हमेशा अपना पावर एडॉप्टर या चार्जर साथ रखें, यूएसबी पोर्ट की बजाए दीवार के सॉकेट का उपयोग करें, सॉफ्टवेयर अपडेट रखें, यूएसबी कंडोम का उपयोग करें, ऑटो कनेक्शन मोड बंद रखें।

आजकल साइबर अपराधी नकली क्यूआर कोड के माध्यम से लोगों को ठगी का शिकार बना रहे हैं, इससे कैसे बचा जा सकता है ?

सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित बेतरतीब क्यूआर कोड को स्कैन करने से पूर्व सावधानीपूर्वक निरीक्षण करें। यदि यह मूल कोड के ऊपर चिपका हुआ प्रतीत होता है तो स्कैन करने से बचें। किसी भी क्यूआर कोड को स्कैन करने से पहले यह सुनिश्चित करें कि वह विश्वसनीय स्रोत से है। व्हाट्सएप, ईमेल या अन्य माध्यमों से प्राप्त संदिग्ध लिंक या क्यूआर कोड को स्कैन न करें, प्रीव्यू फीचर का उपयोग करें ताकि आप देख सकें कि वह आपको किस वेबसाइट पर ले जा रहा है।

ब्लूबगिंग क्या है इससे कैसे सुरक्षित रहें ?

एक प्रकार का साइबर हमला जहां साइबर अपराधी छिपे हुए ब्लूटूथ कनेक्शन के माध्यम से डिवाइस तक अनधिकृत पहुंच प्राप्त करता है। इसके माध्यम से साइबर अपराधी आपकी कॉल्स सुन सकते हैं, मैसेज पढ़ सकते हैं, और यहां तक कि आपके कॉन्टैक्ट्स को भी बदल सकते हैं।

ब्लूबगिंग से सुरक्षित रहने के लिए आवश्यक है कि सार्वजनिक स्थानों पर कनेक्शन स्थापित न करें। किसी भी अज्ञात ब्लूटूथ कनेक्शन अनुरोध को स्वीकार न करें तथा जब भी आप ब्लूटूथ का उपयोग नहीं कर रहे हों, इसे बंद रखें। अपने ब्लूटूथ के लिए ऑटो खोज योग्य मोड को अक्षम करें।

अपने डिवाइस में नियमित रूप से सॉफ्टवेयर अपडेट्स इंस्टॉल करें, क्योंकि इनमें सुरक्षा पैच शामिल होते हैं। पब्लिक Wi-Fi का उपयोग करते समय ब्लूटूथ को बंद रखें।

आप हमारे ग्राहकों को साइबर ठगी से सुरक्षा हेतु क्या सुरक्षा सलाह देना चाहेंगे ?

साइबर ठगी से सुरक्षा हेतु हम नियमित रूप से सुरक्षा निर्देशिका जारी करते है तथा ग्राहकों को ई-मेल के माध्यम से प्रेषित करते है। शाखाओं कार्यालयों में भी हमारी टीम ग्राहकों की

साइबर जागरूकता हेतु नियमित शिविरों का आयोजन करती है। वर्तमान परिदृश्य में कुछ ऐसे महवपूर्ण सुरक्षा उपाय है जिनको अपनाकर हम साइबर ठगी का शिकार होने से बच सकते हैं जैसे कि :

- अज्ञात ईमेल, फोन कॉल, एसएमएस या व्हाट्सएप, टेलीग्राम आदि से संदेशों के जवाब में कभी भी तत्काल कार्रवाई न करें। वैकल्पिक और विश्वसनीय स्रोतों से प्रामाणिकता की पुष्टि करें।
- कभी भी किसी अनजान व्यक्ति को पैसे के बदले अपना बैंक खाता संचालित करने की अनुमति न दें। यदि कोई आपके बैंक खाते का उपयोग करने के लिए पैसे की पेशकश करता है, तो तुरंत इसकी सूचना अपने बैंक और पुलिस अधिकारियों को दें।
- कभी भी पासवर्ड सुरक्षित (save) न करें, अलग-अलग अकाउंट के लिए अलग-अलग पासवर्ड का इस्तेमाल करें।
- कोई भी ऐप (APP) केवल प्रतिष्ठित एवं विश्वसनीय स्रोतों से ही डाउनलोड करें।
- ऑनलाइन बुकिंग के लिए हमेशा प्रतिष्ठित यात्रा/पर्यटन प्लेटफार्मों का उपयोग करें या सीधे होटल की आधिकारिक वेबसाइट/ऐप पर जाएं।
- बैंक खातों के मामलों में बैंक कभी भी दस (10) अंकों वाले मोबाइल नंबर से आधिकारिक संदेश नहीं भेजेगा। ऐसे धोखाधड़ी वाले प्रेषक नंबर को तुरंत ब्लॉक करें और रिपोर्ट करें। किसी भी बैंकिंग कार्रवाई हेतु हमेशा आधिकारिक संपर्क विवरण का उपयोग करके सीधे बैंक से संपर्क करके बैंक से होने का दावा करने वाले किसी भी एसएमएस या संदेश की प्रामाणिकता सत्यापित करें। जालसाज फर्जी संदेश भेजकर केवाईसी अपडेट या अन्य कारणों का हवाला देकर आपके खाते से धनराशि अंतरित कर सकते हैं।

  ग्राहक कृपया ध्यान रखें कि यूको बैंक या कोई भी वित्तीय संस्थान कभी भी ऐसे संदेश नहीं भेजती है। इन धोखाधड़ी का शिकार होने से बचने के लिए सतर्क रहें।
- नकली ऋण स्वीकृति पत्र और चालान से सावधान रहें, ऐसी वैध दिखने वाली ऋण स्वीकृति पर भरोसा न करें और ऋण के त्वरित वितरण के लिए किसी अज्ञात व्यक्ति के खाते में अग्रिम शुल्क या प्रसंस्करण शुल्क के रूप में कभी भी राशि का भुगतान न करें।
- घोटालेबाज यूपीआई खाते में एक छोटी राशि भेज सकते हैं और फिर व्यक्तियों को अधिक भुगतान राशि को वापस करने के नाम पर एक बड़े भुगतान अनुरोध को स्वीकार करने के लिए बरगला सकते हैं। किसी भी लेनदेन को शुरू करने से पहले हमेशा यूपीआई लेनदेन राशि की दोबारा जांच करें और प्रेषक की पहचान सत्यापित करें।
- अपने डिजिटल पहचान को सुरक्षित रखें, अनधिकृत पहुंच और संभावित दुरुपयोग को रोकने के लिए आधिकारिक यूआईडीएआई वेबसाइट या एमआधार मोबाइल ऐप का उपयोग करके अपनी बायोमेट्रिक्स और आधार जानकारी को लॉक करें।
- कोई भी दस्तावेज़ जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड आदि साझा न करें।

ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी के लिए 1930 डायल करें, किसी भी साइबर अपराध की रिपोर्ट WWW.CYBERCRIME.GOV.IN पर करें। साइबर स्वच्छता पर अपडेट के लिए साइबरदोस्त को फॉलो करें। साथ ही यूको बैंक द्वारा परिचालित किए वाले 'सुरक्षा निर्देशिका' को अवश्य पढ़ें। आप यूको बैंक की वेबसाईट पर उपलब्ध 'CYBER SECURITY' सेक्शन से भी सतर्कता जागरूकता' संबंधी अद्यतन निदेश व वीडियो प्राप्त कर सकते हैं।

कविताई

गाँडीव का पछतावा

संतोष सिंह 'राख'
यूको बैंक
खगौल शाखा, पटना

हजारों रावण निकलेंगे
आज एक पुतला जलाने ।

कुछ तो
तेरे शक्ल में
कई तो
मेरे शक्ल में ।

पर उस रावण को
कौन जलाए
जो नस नस में
रीसता रहता है ।
मौका-ए-हालात हमेशा
हमको पीसता रहता है ।

कभी सिस्टम
कभी विज़डम
कभी जात धर्म के
ओट में ।
कभी भाषा
तो कभी अभिलाषा
तो कभी हथेलियों से
फिसलते वोट में ।

लोकतंत्र का बंदर देखो
कितना आज इतरा रहा ।
मुंह में राम बगल में छुरी
बस जुमलों को दर्शा रहा ।
पर देख हाथरस का करुण रुदन
नहीं सिहरन उसको आ रहा ।
खुलेआम लूटती
पुन: द्रौपदी पर कहो!
गाँडीव अब भी
क्यूँ पछता रहा ?

ताल ठोक जंघाओं को वह
खुद को राम बता रहा
एक निर्जीव खड़े
पुतले पर बस
अपना पुरुषार्थ
जता रहा।

खुलेआम लूटती
पुन: द्रौपदी पर
कहो! गाँडीव
क्यूँ पछता रहा ?

हजारों रावण निकलेंगे
आज एक पुतला जलाने ।

कुछ तो
तेरे शक्ल में
कई तो
मेरे शक्ल में ।

प्रेम

कमल पंत
प्रबंधक
विपणन एवं संपदा प्रबंधन विभाग
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

प्रेम...प्रेम पर मैं क्या लिखूं?

प्रेम का कहीं आदि है न अंत है।
प्रेम तो अतुल्य है, प्रेम तो अनंत है।।

प्रेम मीरा-माधव भी है, प्रेम राधा-श्याम है।
प्रेम का ही दिव्य रूप एक शबरी-राम है।।

प्रेम न आसक्ति है, प्रेम तो विरक्ति है।
है बांध ले जो ईश को भी, वो प्रेम की ही शक्ति है।।

है न प्रेम की दवा कोई, हां मर्ज ये जरूर है।
बेअसर हकीम सब हुए, ये प्रेम का सुरूर है।।

जो बांधता है बंदिशों में, न प्रेम का वो रूप है।
गढ़ा गया निर्वात में जो, यह अल्हड़ वो भूप है।।

प्रेम की न जात कोई, न प्रेम का कोई पंथ है।
बिरलों से जो पढ़ा गया, ये प्रेम तो वह ग्रंथ है।।

जिन ने जीतीं सल्तनत, न अंश उनके शेष हैं।
जिसने जीता प्रेम को, वो अमर्त्य, वो अशेष हैं।।

इस प्रेम के व्यापार का, गणित बड़ा अजीब है।
छला गया अमीर वो, जो छल गया गरीब है।।

कविताई

डियर जिंदगी

सुशांत आचार्य
वरिष्ठ प्रबंधक
यूको बैंक, प्रधान कार्यालय

एक अलसाई सुबह
क्या करूँ
छोड़ दूँ बिस्तर और दौड़ लूँ
फिर गुम हो जाऊं
रोजमर्रा के फेरों में
या नींद की दरिया में, एक डुबकी और लूँ
बस यही एक कशमकश फिर मुझे सताती है
जगाती है....

कि जिंदगी
तुझे पाने की चाहत में बड़ी दूर आ गए
थक गए और मुरझा गए
जिसे मंजिल समझा था हासिल करके पाया
कि वो तू नहीं थी
तेरी छदम-छाया थी, मरीचिका थी
उसने बस प्यास को जगाया था

खैर
अब मिल गया सब कुछ जो चाहा था
बस तेरी ही कमी है।
आँखों की चमक खो गई, बस नमी ही नमी है।

तू होती तो सुकून होता
पाकर तुझे मै अलमस्त सोता
सुन ले ऐ जिंदगी
मिलना तो तय है तेरा
क्योंकि चेहरा मेरा
पहचान गया है तुझे

जब मिलेगी तू, तो फिर
हर सुबह भरी होगी उमंगों से
बचपन फिर लौटेगा अंधेरी सुरंगों से
फिर थामे रहूँगा उनका हाथ हमेशा
जो सच में मेरे अपने हैं।
और फिर से तलासूंगा खुद को
भरूँगा अपने सपनों में रंग
फिर उन्हीं रंगों में जिन्दगी
मुस्कुराएगी- चहचहाएगी
फिर लगेगा हर दिन नया जीवन
अलसाई सुबह फिर न आएगी।

प्रशिक्षण:- एक सुखद संस्मरण

विविध

ऋचा कुमारी
प्रबंन्धक (राजभाषा)
सिलीगुड़ी अंचल

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा नवागत राजभाषा अधिकारियों के लिए, सेंट्रल स्टाफ कॉलेज, कलकत्ता में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन एक अनोखा अनुभव रहा। बसंत ऋतु में गुलाबी चादर ओढ़े अठखेलियाँ करते मौसम में 'सिटी ऑफ जॉय' की यात्रा से मन उल्लसित था।

राजभाषा अधिकारी के रूप में चयन के उपरांत मेरे मन में उनके कार्य, ज़िम्मेदारी, बैंक के व्यवसाय में योगदान से जुड़े कई सवाल एवं उन दायित्वों के समुचित निर्वहन के प्रति मेरी उत्सुकता इंतजार को तैयार नहीं थी। फरवरी 2024 माह में मुझे प्रधान कार्यालय द्वारा एक संदेश के माध्यम से सूचित किया गया कि कुल सत्रह नवागत राजभाषा अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु सेंट्रल स्टाफ कॉलेज में व्यवस्था की गई है। प्रशिक्षण की बात होते ही नए लोगों से मिलने, सत्र के कार्यक्रम तथा उसकी रूपरेखा को लेकर हृदय में जिज्ञासा से मन तत्पर था कि कितनी जल्दी मैं कोलकाता पहुँच जाऊं और मैंने टिकट किया और कोलकाता पहुँच गई। हमारे कुछ साथी 28 फरवरी को एवं कुछ सत्र वाले दिन यानि 29 फरवरी को पहुंचे। अपने साथियों से मिलकर मुझे काफी प्रसन्नता हुई तथा मैंने महसूस किया की जैसा कौतूहल मेरे मन में था कमोबेश सब के हृदय में समान ज्ञानेप्सा थी। सेंट्रल स्टाफ कॉलेज में हमारे ठहरने एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था थी। प्रतिभागियों के स्वागत एवं परिचय सत्र का आरंभ हुआ जिससे विभिन्न प्रांतों से आए साथियों को एक दूसरे को जानने का मौका मिला। प्राचार्य महोदय के स्वागत संभाषण जिसमें राजभाषा अधिकारियों के कर्तव्य एवं महत्ता की संक्षिप्त जानकारी ने हमारे बीच नई ऊर्जा का संचार शुरू किया ही था कि हमें महाप्रबंधक महोदय श्री मनीष कुमार जी को सुनने का मौका मिला। उन्होंने अपने वक्तव्य में यह बात साफ कर दिया कि बैंक के व्यवसाय में हम राजभाषा अधिकारी कैसे अपने छोटे छोटे कार्यों से अहम भूमिका निभाते हैं।

राजभाषा का कार्यान्वयन क्यों और कैसे इस विषय के साथ प्रशिक्षण सत्र की पहली कक्षा आरंभ हुई। 'राजभाषा' शब्द का अर्थ उससे जुड़े सारे अनुच्छेद की सम्पूर्ण जानकारी बड़े ही सहज ढंग से श्री प्रियंकर पालीवाल सर द्वारा दी गयी। मानक वर्णमाला एवं तकनीकी शब्दावली का प्रयोग हमें कहाँ और कैसे करना चाहिए तथा किन मानक पुस्तकों का प्रयोग करना चाहिए इससे जुड़ी रोचक जानकारी हमें श्री उदयभान दुबे सर से प्राप्त हुई।

हमारे विभागाध्यक्ष, श्री अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी सर ने अनुवाद विषय से जुड़े कई महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डाला, जिन्हें जानकर मुझे ज्ञात हुआ कि अनुवाद प्रभावी एवं स्पष्ट तरीके से सिर्फ मानव द्वारा ही किया जा सकता है क्योंकि तकनीक भाषाओं में निहित भावों को नहीं समझ सकती जो हम मनुष्य समझ सकते है। एक राजभाषा अधिकारी के व्यक्तित्व में बेहतर सम्प्रेषण कौशल का होना आवश्यक है, और इसके लिए हमारे शब्द भंडार को समृद्ध होना चाहिए, ये कैसे किया जाए, इससे जुड़ी जानकारी भी विभाग प्रमुख ने हमें दी। अच्छे सम्प्रेषण के मौलिक गुणों पर भी विस्तृत चर्चा कक्षा में हुई।

हिन्दी के शलाका पुरुष आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी एवं सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन (अज्ञेय) की जीवनी एवं रचनाओं पर केस स्टडी कराई गयी। इस स्टडी से मेरे मन में उनकी रचनाओं को और गहराई से पढ़ने एवं समझने की इच्छा जागृत हुई। किसी भी साहित्यकार की जीवनी एवं लेखनी हमें जीवन में आत्मसात करने लायक कई आदर्श एवं मूल्य सिखाती है । अज्ञेय जी ने स्वतंत्रता सेनानी के साथ-साथ अपने साहित्यिक धर्म का बखूबी निर्वहन किया। जेल में रहते हुए ही उन्होने 'साढ़े सात कहानियाँ' एवं 'कोठरी की बात' लिखी।

उन्हें साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ से पुरस्कृत किया गया। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की रचना कुटज़ हमें जीवन की विषम परिस्थितियों में भी सम आचरण बनाए रखने की प्रेरणा देती है।

एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसका अद्भुत परिचालन कविराज तरुण सर के द्वारा किया गया जिसमे हमारे बीच के सभी साथियों ने अपने स्तर पर अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया। निसंदेह इस आयोजन ने हम सभी को अमिट यादों का अनमोल उपहार दिया।

तीन दिनों का यह सत्र अब अपने अंतिम चरण पर कब पहुँच गया पता ही नहीं चला परंतु एक और आयोजन जो हम सभी के लिए सरप्राइज़ था 'बैंकिंग क्षेत्र में मूल्य एवं आचार का महत्व'। मूल्य एवं आचार को हम सभी लगभग एक ही चीज़ समझते है परंतु इन दोनों के बीच वृहद अंतर है, मूल्य पहले से निर्धारित है पर वो हमारे आचरण में उतरेंगे या नहीं यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है। प्रशिक्षार्थी के तौर पर हम सभी को राजभाषा अधिकारी के कार्यों एवं बैंक के राजभाषा अधिकारी के तौर पर किस दिशा में कार्य करना है इसकी सम्पूर्ण जानकारी प्रशिक्षण सत्र में दी गयी।

ढेर सारी अविस्मरणीय यादों को अपने हृदय में सँजोकर हम सभी के विदा लेने की घड़ी आ चुकी थी परंतु निसंदेह इस प्रशिक्षण से हम सभी को बहुत कुछ सीखने को मिला। कई अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर मिले एवं इस प्रशिक्षण ने सभी को बेहतर राजभाषा अधिकारी बनने को प्रेरित किया।

राजभाषा के क्षेत्र में प्रथम प्रशिक्षण ने हमें अपने कार्यक्षेत्र में एक नई दिशा दी, हम सभी लाभान्वित हुए और इसका प्रतिफल हमारे कार्यक्षेत्र में निश्चय ही प्रतिबिंबित होगा। ❑

विविध

वो एक कप कॉफी

ऋतु प्रकाश
मुख्य प्रबंधक
सामान्य प्रशासन विभाग, प्रधान कार्यालय

तू फलातूनों अरस्तू है तू...तू जोहरा परवीन ...
तेरे कब्जे में है गर्त...तेरी ठोकर में जमीन...
तू हकीकत भी है... दिलचस्प कहानी ही नहीं
तेरी हस्ती भी है... एक चीज जवानी ही नहीं ..
लड़खड़ाएगी कब तक... कि संभलना है तुझे
उठ मेरी जान ...मेरे साथ ही चलना है तुझे ..

मशहूर शायर कैफी आजमी की लिखी चंद पंक्तियों के साथ, जब अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के अवसर पर आयोजित सभा में मुख्य अतिथि ने अपना प्रेरणादायी भाषण समाप्त किया तो सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। सभा में उपस्थित होकर भी सृष्टि कहीं और ही थी। घड़ी की सुई की तरह टिक-टिक करता उसका मन रोजाना की तरह इसी उधेड़बुन में था कि घर कैसे जल्दी पहुंचे ? नाश्ते के पैकेट को नैपकिन के साथ ही पर्स में डाल कर एक हल्की - सी मुस्कुराहट के साथ तेज कदमों से बाहर निकली ।

मेट्रो में घुसते ही उसे याद आया कि समीर ने कहा था कि कुछ लोग शाम में डिनर पर घर आ रहे है; ऑफिस से जल्दी आ जाना, वह चाह कर भी मना नहीं कर पाई। स्त्रियां कहां कुछ कह पाती है, कितना कुछ अनकहा रह जाता है उसके हृदय में संबंधों को निभाते - निभाते । कभी अनसुना... कभी अनकहा... कितना कुछ अनदेखा सा रह जाता है। इन ख्यालों को झटक कर वह जल्दी-जल्दी में बनने वाली रेसिपी सोचने लगी। कुकर में गाजर का हलवा बनाने की विधि के बारे में सोचने लगी। फिर अचानक मोबाइल पर एक मैसेज से उसका ध्यान भटका। हैप्पी बूमेंस डे... वह मुस्कुराई... कितनी अजीब बात है ना पूरे साल में एक दिन स्त्री के नाम पर होता है परंतु वह भी स्वयं के अनुसार नहीं जीती है। इस महीने की शुरु आत से ही वह अत्यधिक मानसिक तनाव में जी रही थी... थक गई थी वह शायद भागते- भागते, स्वयं को साबित करते –करते.. घर और बाहर की जिम्मेदारी संभालते – संभालते। आज का दिन वह सिर्फ अपने साथ बिताना चाहती थी, अपने लिए बिताना चाहती थी ...बिना किसी तनाव के... बिना किसी प्रतिस्पर्धा के... बिना स्वयं को सर्वश्रेष्ठ साबित किए। जैसी है... वैसी ही रहना चाहती थी।

अगला स्टेशन... राजीव चौक...सुनकर उसकी तंद्रा टूटी... उसने खुद को संभाला और मेट्रो कार्ड निकाल कर स्टेशन से बाहर निकलते हुए सोचने लगी कि वह काफी दिनों से कनॉट प्लेस जा कर कॉफ़ी पीने की सोच रही थी। जैन बुक स्टोर से कुछ किताबें खरीदना चाहती थी। पढ़ने का शौक उसे हमेशा से ही रहा था ...लेकिन उसे अब फुर्सत ही कहां मिलती है । उसने अपना मोबाइल साइलेंट मोड पर किया और कॉफ़ी हाउस में प्रवेश कर सबसे पहले अपनी मनपसंद कॉफी ऑर्डर की । धीरे-धीरे श्वास लेकर स्वयं को इस निर्णय के लिए तैयार किया कि इस पल को वह सिर्फ अपने लिए बिता रही है... अपने लिए जी रही है... तनाव... इच्छाएं... विरोधाभास... सबसे उन्मुक्त होकर सृष्टि सिर्फ कॉफी का आनंद लेने लगी। कॉफी लगभग आधी रह गई तो उसे समीर का फोन आया... हेलो... समीर ने पूछा ...कहां थी तुम ...चार बार कॉल किया... तुमने कॉल ही पिक नहीं किया... याद है न... शाम को मेरे दोस्त आ रहे हैं, कब तक आओगी...सृष्टि ने कहा ...आज फ्रेंड्स पार्टी को रहने दो...

मुझे आने में देर हो सकती है ...वीकेंड में इसके बारे में प्लान कर सकते हैं। समीर ने गुस्से में कहा तुम जानती हो, तुम क्या कह रही हो, तुम चाहती हो कि अपने सारे दोस्तों को पार्टी के लिए मना कर दूं। सृष्टि ने शांत लहजे में उत्तर दिया... आपकी व्यक्तिगत सोच की जिम्मेदारी आपकी है। मैं शारीरिक या मानसिक तौर पर आज और किसी भी अधिक व्यवस्था के बारे में नहीं सोच सकती हूं। उम्मीद है आप मेरी भावनाओं की कद्र करेंगे। समीर ने तो शायद इसकी कल्पना भी नहीं की थी। समीर ने थोड़ा खीजकर कहा ... अच्छा ठीक है और फोन रख दिया।

सृष्टि अब खुद को काफी हल्का महसूस कर रही थी। बची हुई कॉफी की चुस्कियां लेते हुए सोचने लगी कि आज से पहले ऐसा क्यों नहीं कर पाई... क्यों हर बार परिवार, संस्कार, जिम्मेदारियों के बोझ तले स्वयं के अस्तित्व को ही नकारती रही। इसीलिए स्त्री अक्सर समाज या पुरुष वर्ग को ही अपनी स्थिति के लिए कसूरवार मानती है। परंतु वास्तव में यह स्त्रियों की कुंठित सोच है जो पीढ़ियों से उन पर हावी है, जबकि खुला आसमान बाहें फैलाए स्वागत करने को आतुर है ...बस जरूरत है, परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाने की ...औरों के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए थोड़ा सा जीने की ...ताकि वह भी मुस्कुरा सके... थोड़ा सा अधिकार स्वयं के लिए भी रख सके। कभी-कभी जिंदगी में जरूरत है शाम की एक ऐसी ही कॉफी की जो खुद की मुस्कुराहट को वापिस ला सके ...जीवन की आपाधापी में जीवंतता के रंग बिखेर सके। ❑

राम भला क्या राजी होंगे

कविताई

तरुण श्रोत्रिय
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, नागपुर

राम भला क्या राजी होंगे
एक दिन दीया जलाने में!
तुम तो उनके साथ हुए हो,
घर को वापस आने में।

अपने अंतस से सीता को
जब तक तुमने जिया नहीं,
तब तक कैसे तप जानोगे
जो है वन को जाने में।

क्या लक्ष्मण का कोई समर्पण
जीवन में उग पाएगा?
पूरे साल का जमा अंधेरा
एक दिन में मिट जाएगा?

गहन से गूंथो राम की गाथा
वन-वन भटके जाने में
तुम तो उनके साथ हुए हो,
घर को वापस आने में।

अहंकार के जिंदा पुतले
जब तक चलते जाएंगे,
तब तक अंदर बैठे रावण
यूं ही फलते जाएंगे।

उन पुतलों का दीया जलाना
जैसे केवल आग लगाना,
और किसी दीपक का मतलब
घर में केवल माटी लाना।

तिमिर का मिटना सम्भव होगा
खुद प्रकाश हो जाने में,
और राम भी राजी होंगे
ऐसा दीया जलाने में।

चीनी का पराठा

कहानी

शिवम मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंन्धक
सिलीगुड़ी अंचल

बात उन दिनों की है जब हम जीवन की अनंत चिंताओं से दूर बाल्यावस्था के मजे उठा रहे थे। सुबह उठना और एक छोटी सी समस्या कि आज फिर से स्कूल जाना है, से हम काफी व्यथित थे इसके अलावा उन दिनों हमारे जीवन में कुछ भी प्रतिकूल न था। स्कूल जाने के लिए एक ही चीज़ हमें प्रेरित करती थी और वो था हमारे टिफिन में मिलने वाला चीनी का पराठा।

हमारी माताजी को भी पता था कि पराठा हमारे टिफिन में न हुआ तो शाम को घर में भूचाल आ सकता है। अनमने ढंग से स्कूल जाते वक्त रास्ते के हनुमान मंदिर के पास रोज एक बुढ़िया दादी एक छोटे से बच्चे के साथ भीख मांगा करती थी, उन्हें देखने के बाद रोज मेरे मन में कई बाल प्रश्न खड़े हो जाते थे। इनको क्या जरूरत है रोज इस तरह से परेशान होने की ? उस वक्त मेरे हिसाब से भोजन एवं इंसान की आम आवश्यकता स्वत: पूरी हो जाती थी। हमें कोई ज्ञान नहीं था कि इनके लिए इंसान को कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। पढ़ाई-लिखाई व्यर्थ की वस्तु थी, हमें तो बस बड़े होकर हमारे बाबूजी की तरह ऑफिस जाना था, ताकि इस स्कूल जाने के झमेले से हमें निजात मिले। बाबूजी बस ऑफिस जाया करते थे और हमारे हिसाब से वो मजे करने की जगह थी, क्योंकि कष्ट तो स्कूल जाकर पढ़ाई कर हमें उठाना पड़ रहा था। हमारे मन मे बड़ी जिज्ञासा थी ये जानने कि ये चार-पाँच वर्षीय बच्चा स्कूल क्यों नहीं जाता? स्कूल जाना हर बच्चे की ज़िम्मेदारी है। हम एक दिन स्कूल न जाए तो हमारी तो पिटाई हो जाती थी।

एक दिन स्कूल जाते वक्त हमारे कदम अनायास ही बुढ़िया दादी की तरफ बढ़ गए और सामने जाते ही उन्होंने अपने हाथ मेरे सामने फैला दिये, बेटा दो दिनों से कुछ खाया नहीं कुछ खाने को दिला दो पहली बार उन्हें हमने बहुत करीब से देखा –झुर्रियों से भरा चेहरा, खाली आँखें, मैले कुचैले कपड़े, उस कांपती आवाज़ ने हमारी अंतरात्मा को झकझोर दिया। पर कहीं वो छोटा लड़का हमें नज़र नहीं आ रहा था, छोटू कहाँ है हमने पूछ लिया।दादी ने बताया आज उसे तेज बुखार है सड़क के उस पार जो झोपड़ी है वे वहाँ रहते हैं। डाक्टर साहब को दिखा के दवाइयाँ तो दिला दी आपने। दादी के मुखमंडल पर इस प्रश्न से व्यंग्यात्मक हंसी उभर आई, खाने को पैसे नहीं और डॉक्टर –दवाई इन झमेलों के पैसे कहा से आएंगे ? लगता है दादी से किसी ने बहुत दिनों बाद बात की थी आँखों में अश्रुधार लिए वो लगातार बोल रही थी, मुन्ना के माँ-बाप दोनों मजदूरी करते थे, एक दिन पुल गिरने से दोनों की मौत हो गयी। दूधमुँहे बच्चे का मेरे सिवा कोई नहीं बचा, उस दिन उसके साथ-साथ मैं भी अनाथ हो गयी। अनाथ शब्द कितना पीड़ादायी हो सकता है यह शायद उस क्षण में हमने खुद अनाथ होकर महसूस कर लिया था। दादी का हाथ पकड़े हम उनकी कुटिया मे पहुँच चुके थे। मुन्ना बुखार से तड़प रहा था देखते ही उसने कहा –दादी कुछ खाने को लायी हो क्या? हमने अनायास ही खजाने रूपी अपने टिफ़िन को उसके सामने रख दिया। चीनी का पराठा खाते वक़्त छोटू के चेहरे पर जो तृप्ति की भावना झलक रही थी ऐसी संतुष्टि उन पराठों ने कभी हमें नहीं दी। उस एक घटना ने हमें एक साथ जीवन मे कर्म, अन्न, भाग्य, अभिभावक, बाबूजी की पिटाई-सभी की कीमत समझा दी। स्कूल जाने में देर हो चुकी थी हमनें अपने कदम घर की तरफ मोड़ दिये। जाकर सब बातें माँ को बताई, शाम को पिताजी को बताई। पिताजी और हम डाक्टर के साथ दादी की झोपड़ी मे पहुंचे। कुछ दिनो में मुन्ना स्वस्थ हो गया, और हमें साथ-साथ जीवन की अनमोल सीख मिल गई। अब हम स्कूल दो टिफिन लेकर जाने लगे और हाँ अब सिर्फ चीनी का पराठा खाने नहीं पढ़ाई करने के लिए भी हम स्कूल जाते थे। जीवन के यथार्थ से हमारा परिचय हो चुका था। ❑

कुछ प्रसिद्ध व्यंजन

पश्चिम बंगाल में, पाक-कला का दृश्य उतना ही जीवंत और विविधतापूर्ण है जितना कि इसकी संस्कृति और परंपराएँ। बंगाली व्यंजनों के सार को बिना इसके सबसे आम और प्रिय व्यंजन - माछेर झोल का उल्लेख किए बिना नहीं समझा जा सकता। यह सर्वोत्कृष्ट बंगाली व्यंजन इस क्षेत्र के कृषि, नदियों और समुद्री भोजन के प्रति प्रेम से गहरे जुड़ाव को दर्शाता है।

बंगाली व्यंजन अपने समृद्ध स्वाद, जीवंत मसालों और विविध व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध हैं। इस पाक परंपरा के केंद्र में बंगाली थाली है, जो बंगाल के बेहतरीन स्वादों को प्रदर्शित करने वाले संतुलित व्यंजनों से युक्त एक थाली में परोसा जाने वाला पारंपरिक भोजन है। शाकाहारी व्यंजनों से लेकर मांसाहारी व्यंजनों तक, बंगाली थाली इंद्रियों के लिए एक दावत पेश करती है, जिससे खाने वालों को इस व्यंजन को परिभाषित करने वाले स्वाद, बनावट और सुगंध के अनूठे मिश्रण का अनुभव करने का मौका मिलता है।

पश्चिम बंगाल के कुछ प्रसिद्ध व्यंजन

1. आलू पोटोल पोस्तो

यह एक प्रसिद्ध बंगाली व्यंजन है, जो आलू, पोटोल (परवल), और पोस्तो के साथ धनिया, जीरा, लाल मिर्च और हल्दी जैसे मसालों के साथ तैयार किया जाता है। इसमें पोस्तो का पेस्ट डाला जाता है, जो इसे एक अलग स्वाद देता है।

2. इलिश माछेर झोल

पश्चिम बंगाल की सबसे पसंदीदा मछलियों में से एक, हिल्सा या इलिश मछली करी है जिसे कलौंजी के बीज और मिर्च के साथ तैयार की गई तीखी महक वाली करी इसे जरूरी संतुलन देती है और बेहतरीन स्वाद प्रदान करती है।

3. शुक्तो

इसे सब्जियों, दूध और दही के मिश्रण से बनाया जाता है इसमें सब्जी में मसाला का प्रयोग नहीं किया जाता है। शुक्तो एक स्वादिष्ट और स्वस्थ व्यंजन है, जो शरीर को ऊर्जा देता है और पाचन तंत्र को ठीक रखता है।

4. संदेश

इसे दूध के खोया और चीनी से बनाया जाता है इसमें गुलाब जल, केसर और इलाइची मिला सकते हैं जो इसे और भी ज्यादा स्वादिष्ट बनाता हैं।

5. टांगरा माछेर झोल

यह एक रसदार और मसालेदार सब्जी है इसे मछली, तेजपत्ता, लाल मिर्च, धनिया पाउडर, हल्दी, जीरा और ढेर सारे मसालों के साथ बनाया जाता है। इस व्यंजन को गर्म चावल और रोटी के साथ परोसा जाता है।

6. मोचार घोंटो

मोचार घोंटो केले के फूल, कुचले हुए नारियल और आलू से बना एक स्वादिष्ट व्यंजन है, जिसे थोड़े से जीरे और तेजपत्ते के साथ पकाया जाता है।

7. मिष्टी दोई

इसे दही और शक्कर के मिश्रण से बनाया जाता है। इसे गरम तापमान में पकाकर तैयार किया जाता है जो इसे क्रीमी और गाढ़ा बनाता है। इसे मिठाई के रूप में और भी स्वादिष्ट बनाने के लिए केसर और बादाम का उपयोग किया जाता है।

8. कोशा मंगशो

इसमें गोश्त (मिट), धनिया पत्ते, लाल मिर्च,जीरा,अदरव , लहसुन दही और कुछ मसालों के मिश्रण से बनाया जाता हैं इसे गरम चावल या रोटी के साथ परोसा जाता है।

9. पाटीशप्त

एक और अनोखी बंगाली मिठाई, यह आमतौर पर घर पर ही चावल के पाउडर के घोल में बनाई जाती है और नारियल के टुकड़ों के साथ चीनी और खोया मिलाकर बनाई जाती है।

गतिविधियाँ

सतत कौशल-उन्नयन के क्रम में दिनांक 18-20 अप्रैल, 2024 के बीच बैंक के सेंट्रल स्टाफ कॉलेज, कोलकाता में वेतनमान II तथा III के अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

यूको राजभाषा सम्मान, गुवाहाटी अंचल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता के तत्वावधान में यूको बैंक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता द्वारा एकदिवसीय राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन।

जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला, गुवाहाटी अंचल

यूको बैंक षष्ट अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कार समर्पण समारोह का आयोजन।

यूको राजभाषा सम्मान, सिलीगुड़ी अंचल

गतिविधियाँ

यूको जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला, भोपाल अंचल

यूको जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला, बालेश्वर अंचल

यूको राजभाषा सम्मान, देहरादून अंचल

यूको जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला तथा
यूको राजभाषा सम्मान, रायपुर अंचल

यूको जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला
तथा यूको राजभाषा सम्मान, पटना अंचल

कविताई

छल है जिन्दगी

ओंकार राम टाक देहाती
वरिष्ठ प्रबंधक
भाटी सर्कल शाखा, जोधपुर अंचल

एक छल है जिन्दगी,
हँसा कर रुलाती है,
हँसी की खिलखिलाहट में छुपी,
एक सिसकी है जिन्दगी।।

दु:ख के अंत का,
इंतजार है जिन्दगी।।
सुख की बौछारों के बीच,
दु:ख का पहाड़ है जिन्दगी।।

हकीकत के बीच,
ख्वाब है जिन्दगी,
अपनो में से ही दुश्मन
लाजवाब बनाती है जिन्दगी।।

कंचन से शरीर में,
फुहांसे सा दर्द है जिन्दगी।
नश्वर की आशाओं बीच,
क्षणभंगुर है जिन्दगी ।।

कल संवारने की कोशिश में,
आज बीत रही है जिन्दगी।
रोज गवाँ कर आज का सुख,
भविष्य को भूत बनाने का छल है जिन्दगी।।

THE BROOK

द ब्रूक (स्रोतस्विनी)

कूट और हेरॉन की भूमि से चल कर
कल्लोल करता अग्रगामी मैं
फ़र्न की झाड़ियों के मध्य चमकता
- दमकता उपत्यका में उतरता हूँ

तीसेक उपत्यकाएं करके जल्दी पार
या फिर पार्वत्य उतार से फिसलता
बीस गाँवों/ देहातों-कस्बों को को छूता
और पचासेक सेतुओं से होता, सरकता, बहता
आगे बढ़ता हूँ।

बहते हुए मै फिलिप्स के फार्म तक चलकर
एक उफनती नदी में समा जाता हूँ
आखिर लोग आते और जाते रहेंगे
पर मैं बस बहता- चलता चला जाऊंगा।

कूट व हेरॉन स्वच्छ जल-वासी पक्षी है

इस कविता का संदेश है कि मानव जीवन नश्वर है तथा प्रकृति की सुंदरता शाश्वत। मानव जीवन में एक पीढ़ी समाप्त हो जाती है और दूसरी पीढ़ी सामने आ जाती है। जबकि स्रोतस्विनी (ब्रूक) सतत बहती रहती है और राह में आने वाली बाधाओं को दूर करती चलती है। स्रोतस्विनी चुनौतियों का सामना करने में दृढ़ तथा अपना व्यवहार लचीला बने रहने का संदेश देती है।

एल्फ्रेड लार्ड टेनिसन

परिचय

6 अगस्त, 1809 को इंग्लैड के लिंकनशायर के सोमरस्वी में जन्मे अल्फ्रेड लॉर्ड टेनिसन सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले विक्टोरियन कवियों में से एक है। बारह साल की उम्र में उन्होंने 6,000 पंक्तियों की एक महाकाव्यात्मक कविता लिखी। उनके पिता, रेवरेंड जॉर्ज टेनिसन ने उन्हें शास्त्रीय और आधुनिक भाषाओं की शिक्षा दी।

अल्फ्रेड, लॉर्ड टेनिसन, इंग्लैड में विक्टोरियन युग निपुण काव्य कलाकार थे, जिन्होंने रोमांटिक आंदोलन में अपने पूर्ववर्तियों -विशेष रूप से वर्ड्सवर्थ, बायरन और कीट्स द्वारा उन्हें दी गई परंपराओं को मजबूत और परिष्कृत किया। उनकी कविता अपनी छंदात्मक विविधता, समृद्ध वर्णनात्मक कल्पना और उत्कृष्ट मौखिक धुनों के लिए उल्लेखनीय है।

1830 में, टेनिसन ने पोएम्स, चीफली लिरिकल प्रकाशित की और 1832 में उन्होंने पोएम्स नाम से एक दूसरा खंड प्रकाशित किया । 1850 में इन्हें कवि पुरस्कार विजेता के पद पर नियुक्त किया गया । 1884 में इन्हे हाउस ऑफ लॉर्ड्स में शामिल किया गया। न्यूजीलैड के हाई कंट्री में लेक टेनिसन, इन्हीं के नाम पर रखा गया है।

निधन: 6 अक्टूबर 1892

यूको परिवार की तूलिका से

सुश्री श्रीमोयी सरकार

सुश्री श्रीमोयी सरकार

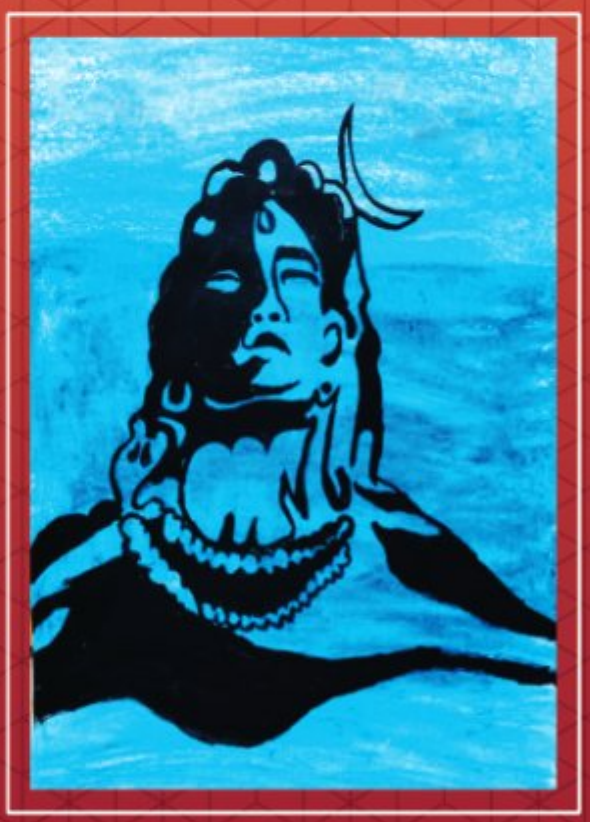

मास्टर गौरव पुत्र श्री मनोरंजन कुमार

मुद्रक : सैलो प्रेस प्रा. लि., ई मेल : sailcpress@yahoo.com

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का
Honours your Trust